आदर्श पत्नी

लेखक

सन्तराम बी० ए०

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य
दो रुपया आठ आना

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६
द्वारा प्रकाशित और युगान्तर प्रेस,
डफ़रिन पुल, दिल्ली द्वारा मुद्रित

प्राक्कथन

सब आश्रमों में श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम है, और इस आश्रम का मूलाधार पत्नी है। सुपत्नी से पुरुष को स्वर्गीय सुख मिलता है और कुपत्नी से वह जीते-जी नरक की भट्टी में जलता रहता है। पत्नी की तनिक-सी भूल या असावधानता से गृहस्थी का सारा सुख नष्ट हो सकता है और उसके चतुर और बुद्धिमती होने से पुरुष को त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति हो सकती है।

पत्नी-धर्म बड़ा कठिन है। इसको भली भांति निभाना साधारण स्त्री का काम नहीं। विवाह के पहले दो-तीन वर्षों में तो पति-पत्नी एक दूसरे पर मुग्ध रहते हैं। काम की आंधी उन्हें उड़ाये लिए फिरती है। परन्तु नई जवानी का मद उतरते ही जब संसार का वास्तविक स्वरूप सामने आता है, तब ज़रा-ज़रा-सी बात पर खटपट होने लगती है। जीवन-यात्रा को निर्विघ्नतापूर्वक समाप्त करने के लिए उस समय किसी पथप्रदर्शक की आवश्यकता होती है, क्योंकि गृहस्थ धर्म के विकट मार्ग में तनिक-सी भी ठोकर लगने से—जरा-सी गलती हो जाने से—दम्पति के पाप और दुःख के गहरे गड्ढे में गिरकर नष्ट हो जाने का डर

रहता है। आज कितने परिवार हैं जहां पति और पत्नी में सच्ची शान्ति और निर्व्याज प्रेम विराजमान है, जहां प्रतिदिन खटपट नहीं सुनाई देती।

ज्ञानियों ने अपने सुदीर्घ अनुभव से गृहस्थों के उपकारार्थ कुछ उपदेश दिये हैं। वे उपदेश धर्म-ग्रन्थों में बिखरे पड़े हैं। मैंने इस छोटी-सी पुस्तक में उन उपदेशों का संग्रह करने का यत्न किया है। इसमें मनु, व्यास, वात्स्यायन और याज्ञवल्क्य आदि महात्माओं के क्रियात्मक उपदेशों के अतिरिक्त इब्वट प्रभृति पश्चिमी विचारकों की अनुभूत बातें भी दे दी गई हैं। कितनी ही बातें अपने अनुभव से भी लिखी हैं। यदि मेरी इस पुस्तिका के अध्ययन से एक भी गृहस्थ अपने पारिवारिक जीवन को सुखमय बनाने में कृतकार्य हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

पुरानी बसी,
होशियारपुर

—सन्तराम

सूची

आदर्श-पत्नी

आदर्श-पति



स्वर्गीया गंगा देवी

समर्पण

उस स्वर्गीया गंगादेवी की पवित्र-स्मृति में
जो मेरे जीवन की संतप्त मरुस्थली
में सुख और शांति की शीतल
गंगा थी ।

—सन्तराम

आदर्श पत्नी

१

व्यक्तित्व

पति और पत्नी के परस्पर प्रेम की स्थानापन्न—उसकी जगह काम देने वाली—कोई भी चीज़ नहीं हो सकती। आदर और सम्मान इस प्रेम के लिए आधार-शिला—नींव—का काम दे सकते हैं परन्तु वे अकेले कुछ नहीं कर सकते। इसलिए प्रेम-बन्धन को कभी ढीला मत होने दो।

जो स्त्री किसी पुरुष के धन पर, प्रतिष्ठा पर, या नाम पर मुग्ध होकर उससे विवाह करती है, विवाह हो जाने पर, यदि उसे केवल धन, प्रतिष्ठा या नाम ही मिले तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। प्रेम कोई और चीज है, वह मोल नहीं बिकता।

'प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट बिकाय।'

जहाँ पति-पत्नी का आपस में प्रेम है, वहां पत्नी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि कभी मन-मुटाव और अशान्ति उत्पन्न होगी ही नहीं। जीवन कोई फूलों की सेज

नहीं। परन्तु प्रेम इन कांटों को निकाल डालने में सहायता देगा।

मत आशा करो कि जीवन में केवल सुख-ही-सुख है। यदि कोई दुःख न होगा तो तुम अपने को पति की सुख-दुःख की संगिनी कैसे प्रमाणित कर सकोगी—

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी,
आपत-काल परखिये चारी।

विपत्ति में मत घबराओ। दुःख के पीछे होने वाले सुख का ध्यान करो।

आपत्ति की घोर अमावस्या में पति को सुख की शरत्-पूर्णिमा का दर्शन कराकर उसको विषाद और निराशा में डूबने से बचाओ।

यदि पति किसी कारण से रूठ जाए तो उसके प्रेम को दोबारा पाने के लिए लम्बा-चौड़ा विवाद (बहस) मत करो। अपनी मनोहरता और रमणीयता को बढ़ाओ। बढ़िया प्रकार के स्वादु भोजन खिलाकर पति के मन को मुग्ध करो।

अपने पति की ईमानदारी और सरलता के सामने दिखलावे के गुणों को तुच्छ समझो।

यदि तुम्हारा पति तुम्हारे मन को रिझाने वाली लम्बी-चौड़ी बातें नहीं कर सकता, तो उसकी बुद्धिमत्ता

से पूर्ण व्यवहार-ज्ञान की बातों को घृणा की दृष्टि से मत देखो।

स्त्रियों के और पुरुषों के जितने भी अच्छे गुण होते हैं, उन सबके अपने पति में होने की आशा मत करो। यदि तुम्हारा पति ऐसा चूड़ामणि होगा, तो तुम्हारे अपने लिए कोई भी गुण बाकी न रह जायगा।

यदि तुम्हारा पति दूसरा कुँवर-कन्हैया नहीं तो दुःखी मत हो। शरीर की सुन्दरता चार दिन की चीज़ है। चरित्र की सुन्दरता ही सच्ची सुन्दरता है।

पति की छोटी-छोटी त्रुटियों पर खीझती मत रहा करो। क्या तुममें कोई ऐसी त्रुटि नहीं है?

पति के साथ दिखलावा मत करो। तुम दोनों का हृदय एक होना चाहिए।

अपने पति से देवता होने की आशा मत करो। यदि वह देवता होता तो तुम उससे बहुत तंग आ जातीं!

अपनी सखियों के सामने अपने पति के धन, कुलीनता, या चातुरी की डींग मत मारो, इससे दूसरों के मन में द्वेष उत्पन्न होता है।

अपनी सभी सखियों के सामने पति के दोष मत कहती फिरो, किन्तु—

प्रत्येक मिलने वाली स्त्री के कानों को पति के गुण-

गान से बहरा मत कर दो। उसके गुणों पर मन ही मन प्रसन्न रहो।

पति की आज्ञाकारिणी होने का अर्थ यह मत समझो कि उसकी प्रत्येक उचित और अनुचित बात को मानना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम उसकी सहधर्मिणी और अर्द्धाङ्गिनी बनो, न कि नीच वासनाओं को पूर्ण करने वाली लौंडी। अपने सत्परामर्श—नेक सलाह—से उसके लिए मंगलकारिणी बनो।

यदि तुम्हारा पति डील में छोटा और पतला है, और बहुत मज़बूत नहीं, तो इतने से असन्तुष्ट होकर उसे 'पुरुषत्व-हीन'—नामर्द—मत समझने लगो। पुरुषत्व केवल शारीरिक गुण ही नहीं।

तुम्हारा पति अपने विषय में जो कुछ कहता है, उसी से उसका मूल्य न लगाओ, वरन् उसके गुण और अवगुण पर आप बुद्धिपूर्वक विचार करो। सम्भव है वह बहुत ही लज्जाशील हो, या उसका स्वभाव कुछ डींग मारने का हो।

पुरुष से मत आशा रखो कि जिस दृष्टि से स्त्रियाँ किसी चीज़ को देखती हैं, उसी से वह भी देखे। अपने को उसके स्थान में रखकर देखने का यत्न करो।

जिन विषयों का तुम्हें उसकी अपेक्षा कम ज्ञान है, उनमें उसे परामर्श देने का यत्न मत करो।

अपने पति को किसी दूसरी स्त्री के पति के नमूने पर ढालने की चेष्टा मत करो। उसे अपने ही ढंग का रहने दो, और उसीसे प्रेम करो।

पति को इस बात का अनुभव मत होने दो कि तुम उसके लिए केवल बच्चे पैदा करने की मशीन या घर का काम-काज करने वाली नौकरानी हो। कोई भी विषय ऐसा न होना चाहिए, जिस पर तुम्हारा पति बात करे और तुम उसे समझ न सको।

धर्म, राजनीति, इतिहास, स्वदेश और विदेश में होती रहने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं का तुम्हें थोड़ा-बहुत ज्ञान अवश्य रहना चाहिए। इसके बिना तुम उसकी बात-चीत में भाग न ले सकोगी।

पहले पति की प्रशंसा के पुल बाँधकर पीछे से उसमें कोई छोटी-सी त्रुटि मालूम हो जाने पर चिन्ता में न डूब जाओ।

जब तुम किसी विषय पर अपने विचार प्रकट करना चाहती हो तब उन्हें दृढ़तापूर्वक प्रकट करो। पति के दो शब्द कह देने पर चुप होकर मत बैठ जाओ। तुम्हारा अधिकार है कि पति तुम्हारी बात को सुने।

जिन लोगों को तुम पसन्द नहीं करतीं, उनके साथ उग्र बर्ताव—तलखमिजाजी—मत करो, नहीं तो तुम्हारे

पति को तुम्हारे कारण लज्जित होना पड़ेगा। शिष्टता पर कुछ मोल नहीं लगता।

इस बात को पसन्द मत करो कि तुम्हारा पति तुम्हारे साथ बच्चों का-सा बर्ताव करे और तुमसे किसी प्रकार की जिम्मेदारी लेने की आशा न रक्खे। जहाँ तुम उससे अच्छे समाचार सुनती हो वहां बुरे समाचार सुनने पर भी हठ करो। तुम उसके सुख की ही नहीं, दुःख की भी साथिन हो। हर्ष और शोक, हानि और लाभ, दोनों में उसकी हिस्सेदार बनो।

कभी-कभी पति की प्रशंसा करने से मत चूको। उसने कभी कोई सुन्दर वस्त्र पहना हो तो कहो कि आप के शरीर पर यह कैसी सुन्दर शोभा देता है! किसी बात में उसे विशेष सफलता प्राप्त हुई हो तो उसकी योग्यता की बड़ाई करो। उसने किसी स्थान पर व्याख्यान दिया हो, किसी पत्रिका में लेख लिखा हो, किसी सौदे में लाभ उठाया हो, उसके खेत में फसल अच्छी लगी हो, इत्यादि अवसरों पर उसकी प्रशंसा से उसके उत्साह को बढ़ाओ।

अपने को एक निःसहाय जीव मत प्रकट करो, जो अपने लिए आप कुछ नहीं कर सकती। देहली से मेरठ जाना हो तो पति को दुकान का काम छोड़कर वहां पहुँचा आने पर मजबूर मत करो। अपने में इतना बल पैदा करो

कि कोई दुष्ट तुम पर हाथ उठाने का साहस न कर सके। यह सच है कि कमजोर और साथ चिपटी रहने वाली स्त्री बहुधा प्यारी बहुत होती है। परन्तु वह प्रायः उतनी ही दुःखदायिनी होती है।

जब पति सवेरे काम पर जाने लगे और जब वह सायंकाल लौटकर घर आये तब उसे 'नमस्ते' कहना मत भूलो।

चिन्ता में मत डूबी रहा करो। इससे मनुष्य पागल हो जाता है। यदि तुम्हें चिन्ता घेर भी ले, तो दिन को हँसमुख सहेलियों की संगति में काटने का यत्न करो। सहेलियों से जाकर मिलो और उनके साथ गपशप लगाओ। चिड़िया-घर या अजायब-घर देखने चली जाओ। चिन्ता का स्वभाव बहुत बुरा है। इस स्वभाव को पहले ही से रोको। सदा प्रसन्नचित रहने का अभ्यास करो।

खिझते और चिढ़ते रहने वाली स्त्री पति के लिए भारी दुःख का कारण होती है। स्त्रियां यदि अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए, खान-पान में मर्यादा और नियम से काम लें, तो उन्हें ये बुरे स्वभाव बहुत कम सताएँ।

२

खटपट से बचने के उपाय

विवाह अपने आप में बहुत अच्छी चीज़ है, परन्तु मूर्ख लोग ईश्वर की प्रत्येक कृपा को भी शाप में बदल लेते हैं। उनकी दशा उस मनुष्य के सदृश है जो कहता था—"यह रस्सा बहुत अच्छा है। मैं इसके साथ अपने गले में फाँसी लगाऊँगा।"

पति और पत्नी में एक दूसरे के प्रति जब तक सम्मान और सहिष्णुता—कड़वी बात को सहारने—का भाव न हो, गृहस्थ का मार्ग पुष्पों के स्थान में कांटों से भर जाता है।

विवाहित जीवन तभी सुखमय हो सकता है जब रूखेपन और चिड़चिड़ेपन से अलग रहकर सावधानी के साथ आपस के प्रेम की रक्षा की जाय, और पति-पत्नी नैतिक और शारीरिक गिरावटों से बचकर चलें।

दम्पति को समझौतों के द्वारा आपस के झगड़ों को निपटाते रहना चाहिए।

एक दूसरे के प्रति त्याग से ही गृहस्थ-जीवन सुखी बन सकता है।

पति की प्रकृति और स्वभाव का पूरो तरह से अध्ययन करो। उसकी प्रकृति को समझ लेने के बाद ही तुम उसके साथ सुखपूर्वक रह सकोगी। उसके स्वभाव को भलीभांति समझे बिना वैवाहिक जीवन के शांतिमय होने की आशा मत करो।

मत आशा करो कि केवल वही प्रेम का प्रकाश करे और तुम उसके प्रति कुछ भी प्रेम न दिखलाओ। तुम्हारे प्रेम की भित्ति के बिना उसका प्रेम खड़ा न रह सकेगा।

पति के साथ झगड़ा मत करो। याद रक्खो, अकेले हाथ से कभी ताली नहीं बजती। तुम उनमें से एक मत बनो। किसी दूसरे के साथ झगड़ा हो जाये तो कोई तीसरा व्यक्ति उसे शान्त करा सकता है, परन्तु दम्पति की कलह बड़ा भयंकर रूप धारण कर लेती है। यह अपने आप शान्त हो जाये तो हो जाये, कोई भी तीसरा व्यक्ति इसको शान्त नहीं करा सकता। प्रेम-डोरी के एक बार टूट जाने से उसका दोबारा जुड़ना कठिन हो जाता है।

मन, मोती अरु दूध रस, इनको यही स्वभाव।
फाटे पीछे ना मिलें, कोटिन करो उपाव॥

किसी भी व्यक्ति को चाहे वह तुम्हारा कितना ही निकट का सम्बन्धी क्यों न हो, अपने सामने पति की निन्दा मत करने दो।

चाहे तुम्हारा कितना भी जी चाहे, 'मैंने तुम्हें नहीं कहा था', ये शब्द अपने पति से मत कहो। इनसे कुछ लाभ नहीं। ऐसा न कहने के लिए वह तुम्हारा कृतज्ञ होगा।

जब तक तुम आप यत्न नहीं करतीं, तब तक मत आशा करो कि तुम्हारा पति तुम्हें सुखी रख सकेगा। तुम उसे सुखी रखने का भरसक यत्न करो। फिर तुम अपने आप ही सुखी रहोगी।

अपने पति के दोष निकालकर उसे तंग मत करो। यदि वह तुम्हारे प्रेम के लिए तुम्हारी इच्छाओं को पूरी नहीं करता, तो निश्चय जानो कि उसे दिक करने से वह तुम्हारे मनोरथ कभी पूर्ण न करेगा।

पति के साथ मुँह न फुलाती रहो। यदि उसने किसी विषय में तुम्हें खिझाया भी सही, तो उसे मन में मत रक्खो। मुँह फुलाने वाली स्त्री कर्कशा के समान ही बुरी होती है।

मत समझो कि अपनी मनमानी करते रहने से तुम सुखी रह सकती हो। सभी आवश्यक बातों में तुम्हें गाड़ी के घोड़ों के सदृश इकट्ठा चलना चाहिये।

मत आशा करो कि जो कुछ भी करे पति ही करे, और तुम कुछ भी न करो।

हठीले पति के साथ विवाद मत करो। बात को इतना मत बढ़ाओ कि उसे क्रोध आ जाये। तुम प्राय: अपनी बात किसी दूसरी रीति से मनवा सकती हो।

हठ वह पाप है जो एक दूसरे से प्रेम करने के लिए तरसती हुई दो आत्माओं को दूर-दूर रखता है। प्रकट होने का यत्न करने वाले प्रेम के रास्ते में जो मन-मुटाव रुकावट डालता है, उससे बुरी और कोई रंजिश नहीं। 'झगड़े को अब भुला दीजिये' पति की इस प्रार्थना को जो पत्नी स्वीकार करने से इन्कार कर देती है, वह प्रेम का, मानव-प्रकृति का, आनन्द का, निरादर करके पाप की भागी बनती है।

पति को वश में करने और अपने पीछे चलाने के लिए ऐसे उपाय मत करो, जिनको सब कोई देख लें। हो सकता है कि बहुत ही सावधानी के साथ उसका प्रबन्ध करने की आवश्यकता हो, परन्तु ऐसा न हो कि लोग तुम्हारे पति को स्त्री-दास समझने लगें। सब से बड़ी बात यह है कि उसे इस बात का कभी अवसर न दो कि वह यह समझने लगे कि तुम उसे अपने पीछे चला रही हो।

लोगों के सामने, वरन् अपनी परम सखियों के सामने भी, अपने घर के झगड़े न ले बैठो। यदि किसी

अप्रिय बात पर विचार करना हो तो बिल्कुल एकान्त में जाकर ही उस पर विचार करो।

पति के साथ रूठकर रात्रि को मत सोओ। यदि दिन में तुम्हें उससे क्लेश भी हुआ है तो भी उसे क्षमा कर दो, और मन को शान्त करके विश्राम करो।

पुराने क्लेशों को मत ले बैठो। जब एक बार कोई बात निपट चुकी, तो फिर उसे भूल जाओ, या कम से कम फिर उसकी चर्चा मत करो।

यदि दुर्भाग्य से पति के साथ तुम्हारा झगड़ा हो गया है तो उसे मनाने में अपना अपमान मत समझो। यदि तुम उसी का दोष समझती हो, तो भी कोई बात नहीं, उसे मौका दो और अधिक सम्भव है कि वह अपने दोष को स्वीकार कर ले। परन्तु इस विषय में वह आप आगे बढ़ने का साहस नहीं करेगा, क्योंकि उसे डर है कि तुम कहीं उसे पीछे न ढकेल दो।

संसार में आज तक किसी ऐसे पुरुष ने जन्म ही नहीं लिया, जिसके मन में किसी रूपवती रमणी को देखकर उसके लिये कामना न उत्पन्न हो—चाहे यह कामना अनुचित ही है। यह कामना स्वाभाविक है। इसे वही लोग पाप कहते हैं जो समझते हैं, कि हम प्रकृतिदेवी से भी अधिक ज्ञान रखते हैं। कामना का उत्पन्न होना पाप नहीं, वरन् इसकी चर्चा करना पाप है। इसलिये

पति किसी दूसरी स्त्री को देखकर प्रसन्न हो तो इतने से ही रूठकर लड़ने न लग जाओ। हां, उसका ध्यान अवश्य रखो।

तुच्छ-तुच्छ बातों पर मत अड़ो, उसकी बात मान लो। हां, यदि किसी सिद्धान्त की हानि हो, तब दूसरी बात है। परन्तु पति-पत्नी के कितने ही झगड़े तुच्छ-तुच्छ बातों से ही उत्पन्न होते हैं।

क्रोध की अवस्था में कटु वचन मत कहो। वे न केवल उसी समय चुभते हैं, किन्तु तुम्हारे उनको भूल जाने के बहुत दिन पीछे भी वे स्मरण रहते हैं।

हँसना और मीठी बातें करना, केवल बाहर वालों के लिए ही मत रक्खो। इनका सबसे पहला अधिकारी तुम्हारा पति है।

किसी भी विषय में पति पर हुक्म चलाने—'यों करो और ऐसा करो', कहने की चेष्टा मत करो। वह इसे सहन नहीं करेगा, और उसे दुःख होगा। परन्तु—

उसे भी अपने पर अन्धाधुन्ध हुक्म मत चलाने दो। सदा युक्तिसंगत और धर्मानुकूल अनुनय-प्रार्थना पर ही आचरण करो। तुम्हारे बर्ताव से उसे यह पता लग जाना चाहिए कि तुम उसे अपना नेता मानने को तैयार हो,

परन्तु पशुओं के सदृश हांका जाना तुम्हें पसन्द नहीं ।

विवाह के प्रथम वर्ष में जैसा तुम्हारा प्रगाढ़ प्रेम था, दो-एक सन्तान हो जाने पर उसमें किसी प्रकार की कमी न होने पाये । जब तक जीती हो, उस प्रेमाग्नि को बराबर प्रज्वलित रक्खो ।

पति को इस बात का अनुभव मत होने दो कि जो बात वह करता है, तुम उसमें छिद्र (नुक्स) निकालती रहती हो । छिद्र ढूंढ़ने का काम दूसरों के लिए छोड़ दो । इसका अर्थ यह नहीं कि मित्रभाव से तुम गुणों और दोषों पर विचार न करो ।

सदा खोट निकालते रहने और झूठी खुशामद के बीच में एक सुखद मार्ग ढूंढ़ लो ।

पति को डांट-डपट मत करो । देखने वालों के लिए पत्नी के पति को झिड़कने के दृश्य से बढ़कर बुरी और दूसरी चीज़ नहीं । और पति के लिए तो यह बुरी से भी बढ़कर है । यह बड़ी लज्जा की बात है ।

जो लोग तुम्हारे पति की आलोचना करते हैं, यहां तक कि उसकी मूँछों और हजामत तक में दोष दिखाकर हँसी करते हैं, उनके साथ तुम मत मिलो । कई बार मनुष्य बड़े-बड़े ठट्ठों की कुछ परवाह न करके एक छोटी-सी हँसी से बहुत चिढ़ जाता है । हो सकता है कि पुरुष

विनय और नम्रता के कारण अपने बड़े से बड़े प्रशंसनीय कार्य की चर्चा न करे, परन्तु कोई उसके नेत्रों के रंग, नाक की बनावट, या मुख की आकृति पर हँसी करेगा तो वह क्रोध से लाल हो जाएगा।

इस बात को मत भूलो कि तुम और तुम्हारा पति संसार-यात्रा में एक दूसरे के साथी हैं। यदि वह समझ ले कि मेरा साथी मेरे विरुद्ध है तो वह सहानुभूति की आशा किससे करेगा? यदि उसको चिढ़ाने में तुम भी संसार के साथ मिल जाओगी, तो फिर मङ्गल कहां?

इस बात को सदा स्मरण रक्खो कि समय और ईश्वर की शक्ति हमारे शोकों, हमारे दोषों और हमारी भूलों को ठीक करके सुख में बदल देती है। जिन पति-पत्नियों में जवानी में कलह रहती है, प्रायः जवानी का मद उतरते ही वे एक दूसरे के अनुकूल हो जाते हैं और उनका सब झगड़ा शान्त हो जाता है।

पति और पत्नी जितने अधिक विषय-लम्पट होंगे, उतनी ही अधिक उनमें खटपट रहेगी। संयम से रहने वाले ऋतुगामी पति और पत्नी में ही सदा प्रेम बना रह सकता है।

मनु जी के इस उपदेश को मत भूलो कि जो स्त्री मन, वाणी और देह से पति को दुःखित नहीं करती, वही पतिलोक को प्राप्त होती है और साध्वी कहलाती है।

इसलिए तुम्हें मन, वाणी तथा शरीर का संयम करना चाहिए।

विवाह के समय अग्नि-रूप परमात्मा और विद्वानों को साक्षी करके तुमने जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, उनको पूरा करने का यत्न करती रहो। उनका स्मरण करते रहने से तुम्हारे छोटे-छोटे मन-मुटाव अपने आप दूर हो जाएँगे। उन पवित्र प्रतिज्ञाओं में से कुछ आगे दी जाती हैं :—

"इस यज्ञशाला में बैठे हुए विद्वान् लोगो! आप निश्चय करके जानें कि मैं अपनी प्रसन्नतापूर्वक गृहस्थाश्रम में एकत्र रहने के लिए पति को स्वीकार करती हूँ। मेरा हृदय जल के समान शान्त और मिला हुआ रहेगा। जैसे प्राण-वायु मुझको प्रिय है, वैसे ही मैं पति से सदा प्रसन्न रहूँगी। जैसे धारण करने वाला परमात्मा सब में मिला हुआ है, वैसे ही हम एक दूसरे में मिले रहेंगे। मेरी आत्मा आपके साथ दृढ़ प्रेम को धारण करे। मेरा मन आपके अनुकूल हो!

"मेरे पति का जो मार्ग है वही मार्ग मेरा हो, जिससे मैं सुख पाती हुई परमात्मा को प्राप्त होऊँ।

"हे वीर! आज से मैं आपके हाथ और आप मेरे हाथ बिक चुके हैं। हम कभी कोई ऐसा काम नहीं करेंगे, जो हममें से किसीको बुरा लगने वाला हो।

"सौभाग्य की वृद्धि के लिए मैं आपके हाथ को ग्रहण

करती हूँ। हम दोनों मिलकर घर के कामों को सिद्ध करें।

"हे भद्र वीर ! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए हैं। मेरे लिए आपके बिना इस जगत में दूसरा पति, सेव्य और इष्टदेव कोई नहीं है। मैं आपके सिवा किसी दूसरे को न मानूँगी। जैसे आप मेरे सिवा किसी दूसरी स्त्री से प्रीति न करेंगे, वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष से प्रीति-भाव से न बर्ता करूँगी। आप मेरे साथ सौ वर्ष तक आनन्द से, प्राण धारण कीजिए।

"दिव्यस्वरूप परमात्मा मुझे पितृकुल से छुड़ावे, परन्तु पति के साथ से न छुड़ावे।

"हे नाथ ! मेरा और तेरा परस्पर अनुराग हो। उस अनुराग में पूजनीय परमात्मा सहायक हों।

"हे वधू ! मेरे चित्त के अनुकूल तेरा चित्त रहे। मेरी वाणी को तू एकाग्रचित्त से सेवन किया कर !

"हे ध्रुव नक्षत्र ! जैसे तू निश्चल है वैसे हो ईश्वर करे कि मैं पति के कुल में निश्चल रहूँ।

"हे वर ! प्राणरूपी सूत से सच्चाई की गांठ लगाकर मैं तेरे हृदय और मन को बाँधती हूँ।

"हे स्वामिन् ! जो यह तेरा आत्मा (अन्तःकरण) है; वह मेरे आत्मा (अन्तःकरण) के तुल्य प्रिय हो, और मेरा

जो यह आत्मा, प्राण और मन है, वह तेरे आत्मादि के लिए सदा प्रिय रहे।

"हे वधू ! तू हमारे पितादि मनुष्यों के लिए सुख की देने वाली हो। पति से विरोध न करने वाली, अपने उत्तम पुरुषार्थ से प्रिय दृष्टि और सबका मंगल करने वाली हो।

"हे वरानने ! मेरा पिता, जो तेरा ससुर है, उसमें उचित प्रीति करके सम्यक् प्रकाशमान् चक्रवर्ती राजा की रानी के सदृश पक्षपात छोड़कर प्रवृत्त हो। मेरी माता, जो तेरी सास है, उसमें प्रेम वाली होकर उसकी आज्ञा में रहा कर। मेरी बहिन, जो तेरी ननद है, उससे भी प्रीति कर। मेरे भाई जो तेरे देवर और जेठ हैं, उनमें भी प्रीति से प्रकाशमान् हो।

"हे पति ! तेरे कुटुम्ब को मैं पालूँगी। तेरे साथ मीठा बोलूँगी। तेरे दुःख में दुःखी और तेरे सुख में सुखी रहूँगी।

"मैं तुझे देह-संस्कार अर्थात् उबटन, गन्धमाल्य, और इतर आदि से प्रसन्न करूँगी। तुझे प्रसन्न करने के लिए सोने के, रत्नों के आभूषण पहनूँगी।"

'जिस कुल में स्त्री से पति और पति से पत्नी प्रसन्न रहती है उस कुल में सदा स्थिर सुख रहता है। पुरुष की अप्रसन्नता से सन्तान उत्पन्न नहीं होती।'

'जिस कुल में पति-पत्नी एक दूसरे से प्रसन्न रहते

हैं, उस कुल में धर्म, अर्थ और काम तीनों वास करते हैं।'

ऊपर लिखे उपदेशों पर शान्तिपूर्वक विचार करके आपस के कलह का नाश कर दो।

पति के न रहने पर स्त्री की जो दुर्दशा होती है, उसका अनुमान किसी विधवा की अवस्था को देखकर किया जा सकता है। पति के प्रति स्त्री ने जो कड़वे वचन बोले थे, वे पति के मरने के बाद उसे याद आकर दुःख देने लगते हैं। तब वह उनका प्रायश्चित्त भी नहीं कर सकती। पश्चात्ताप के सिवा उससे और कुछ नहीं बन पड़ता। इस लिए पति के साथ ऐसा बर्ताव करो जिसके लिए तुम्हें पीछे से पश्चात्ताप न हो।

३

स्वभाव

पति का स्वभाव जब तक बहुत ही बुरा न हो, उस को बदलने का सदा यत्न न करती रहो। वह जैसे है उसके साथ निभाओ, और उसको अशान्त मत करो।

इस पुस्तक के उत्तरार्द्ध में दिये गए 'आदर्श पति' नामक भाग को अपने पतिदेव को अवश्य पढ़ाओ। यदि वह हिन्दी न पढ़ सकता हो तो उसे आप पढ़कर सुनाओ। जैसे इस भाग में पत्नियों के उपदेश हैं, वैसे ही उसमें पतियों के सुधार की बातें हैं।

विशेष अवस्थाओं को छोड़कर पति से पहले न भोजन करो और न सोओ।

सदा पति से पहले उठो और नित्य-कर्मों से निवृत्त होकर गृह-कर्म में लग जाओ।

प्रत्येक बात में पति की हाँ में हाँ मत मिलाओ।

अपनी स्वतन्त्र सम्मति रक्खो। यदि प्रत्येक बात में तुम्हारी अपनी कुछ भी राय न होगी, तो तुम दोनों के लिये जीवन सर्वथा नीरस हो जाएगा, और कोई भी चीज़ ऐसी न रहेगी जिस पर तुम आपस में बातचीत कर सको। स्मरण रहे कि विचित्रता में ही जीवन की सरसता है।

पति को इस बात का साहस मत करने दो कि जिस शिष्टाचार का बर्ताव वह दूसरी स्त्रियों के साथ करता है, तुम दोनों के अकेले होने पर वह तुम्हारे साथ उस शिष्टाचार को छोड़ दे। तुम्हारा सम्मान न होने से बच्चे शिष्टाचार नहीं सीख सकते।

मनु जी ने स्त्रियों के लिए ये छः दूषण बताये हैं:—

शराब पीना, दुष्टों का संग, पति से पृथक् रहना, व्यर्थ घूमना, बेवक्त सोना, और दूसरों के घर में वास करना। इसलिए इन दूषणों से सदा दूर रहो।

तुम्हारे लिये मुख्य कर्तव्य ये हैं—पति की कमाई की रक्षा करना, उसे नियमपूर्वक किफायत से खर्च करना, पवित्रता, पति-सेवा, भोजन बनाना, गृह-सामग्री की देख-भाल।

सदा हँसमुख और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव बनाओ। तुम्हारे चिड़चिड़ा होने तथा कड़वा बोलने से सारा परिवार दुःख में डूबा रहेगा।

कागा काको धन हरे, कोयल काको देय,
मीठे बचन सुनाय के जग अपना कर लेय।

मन को प्रसन्न रखने का अभ्यास करो। जैसे सूर्य से प्रकाश की किरणें निकलती हैं, वैसे तुममें से प्रसन्नता की किरणें निकलकर सारे परिवार पर आनन्द की वर्षा करें। इससे तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का मंगल होगा।

नम्र और मीठा बोलने वाली, पति में प्रीति रखने वाली, घर के कामों में होशियार, पुत्रवती, सुशीला और सुन्दर शरीर वाली स्त्री ही पति को प्यारी होती है। क्रोधी और कलही स्त्री पति की आयु का नाश कर देती है। अतएव चिरकाल तक सुहागिन बनी रहने की इच्छा रखने वाली स्त्री को क्रोध, कलह और कटुभाषण—कड़वा बोलने का स्वभाव—यत्नपूर्वक छोड़ देना चाहिए।

सरस स्वभाव आंख में शीला,
बेष सुहावन बचन रसीला।

मित्र वही है जिस पर विश्वास हो, स्त्री वही जिससे सुख प्राप्त हो।

आगे लिखे स्वभाव स्त्रियों के लिए निन्दित हैं। इसलिए उनको छोड़ देना चाहिए:—

सदा घर के द्वार पर खड़ा रहना। झरोके, खिड़की, चौबारे में से बाजार की ओर ताकते रहना। पड़ोस

के घर में जहां जवान लड़के रहते हों, जाकर बैठे रहना। पुरुषों को बार-बार ताकना। जब कोई दूसरा पुरुष देखे तो पीछे से आप भी उसे तिरछी चितवन से देखना। सदा पिता के घर रहना। बहुत हँसना। घर-घर फिरना। सन्तान की प्राप्ति के लिए फकीरों और साधुओं के, पास जाना।

पति के जीते जी जो स्त्री उपवास करती है वह पति की आयु को घटाती है।—(मनु)

जिस समय पति भोजन करने बैठे, उसी समय सारी दुनियाँ के झगड़े मत ले बैठो। यह बहुत बुरा स्वभाव है। भोजन करते समय उसे प्रसन्न करने वाली बातें सुनाओ। दुःख-दर्द सुनाने के लिए कोई और समय मिल जाएगा।

इसमें सन्देह नहीं कि जितना प्यारा काम होता है, उतना चाम नहीं होता, परन्तु फिर भी दिन-रात घर के धन्धों और चिन्ताओं ही में न लीन रहो। कुछ समय पति के साथ हँसने-खेलने के लिये भी जरूर निकालो। काम करने के लिए पुरुष नौकर भी रख सकता है। तुम केवल काम करती रहने से ही उसे प्रसन्न न रख सकोगी।

निकम्मी स्त्रियां प्रायः इकट्ठी होकर एक दूसरे से व्यर्थ बातें किया करती हैं। दूसरों की निन्दा-चुगली के सिवा उनके पास बात करने के लिए और कोई विषय ही नहीं होता। इससे झट ही उनकी आपस में लड़ाई हो

पड़ती है। इसलिए अपने घर में अकेली बैठकर काम करने का स्वभाव बनाओ, और सहेलियों से मिलने-मिलाने के लिए कोई विशेष समय नियत कर रक्खो।

मातृ-धर्म का पालन करती हुई झूठी लोक-लज्जा और संकोच को छोड़कर अपनी सन्तान के पालन-पोषण और शिक्षण पर विशेष ध्यान दो। जो स्त्री अपनी सन्तान को तन्दुरुस्त रखने और उसमें अच्छी आदतें डालने का यत्न नहीं करती, वह जीते-जी नरक को जाती है। यदि सास-ससुर के सामने बच्चे को नहलाने-धुलाने, खिलाने-पिलाने, और शिक्षा देने में तुम्हें संकोच होता है तो उसको उत्पन्न करते समय तुम्हें लज्जा क्यों न हुई ?

४

अर्थ-सम्बंधी बातें

मत समझो कि धन से मनुष्य सुखी हो जाता है। धन से आराम पाने में सहायता जरूर मिलती है, परन्तु जिस वस्तु का नाम सुख है वह दूर है।

अपनी साड़ियों और गहनों के लिए पति को नियत समय से अधिक देर तक काम करने पर विवश मत करो। जितना वह साधारण रीति से कमाता है, उसी में किफायत से निर्वाह करो।

जहाँ तक हो सके ऋण मत लो। इससे जहाँ तुम्हारे मन पर एक बोझ रहेगा, वहाँ तुम्हारा पति भी चिन्ता में डूबा रहेगा।

अपनी आय (आमदनी) सब की सब मत खर्च कर दिया करो। बीमारी और बेरोजगारी के दिनों के लिए भी कुछ जमा करती रहो।

दिखलावे की बातों पर बहुत धन मत व्यय करो। यदि तुम्हारे पास फालतू रुपया नहीं तो दुनिया की वाह-वाह के लिए ब्याह-शादी पर वित्त से बाहर क्यों खर्च करती हो ? दो दिन की झूठी बड़ाई के लिए जीवन को दुःखमय मत बनाओ।

जब कभी कोई नई वस्तु लेने को तुम्हारा मन चाहे तब अपनी छोटी-सी पूंजी में से धन मत निकालो। तुम्हारे जरूरी खर्चों के बढ़ने पर इन निकाली हुई रकमों को फिर पूंजी में डालना तुम्हारे लिए उतना आसान न होगा।

आमदनी और खर्च के सम्बन्ध की बातों में पति, से किसी बात का परदा मत रक्खो। पूर्ण विश्वास ही सर्वोत्तम है।

पति को भी अपने से कोई आय-व्यय सम्बन्धी बात छिपाये मत रखने दो। तुम उसके जीवन की संगिनी हो। उसकी कितनी आमदनी और कितना खर्च है, इस बात को जानने का तुम्हें पूर्ण अधिकार है।

जीवन के सर्वोत्तम वर्षों को कंजूसी से अनावश्यक तौर पर धन जमा करने में मत बिताओ। बहुत बूढ़े हो जाने पर तुममें उस धन से आनन्द लेने की शक्ति ही न रह जाएगी।

अपने बच्चों के लिए धन इकट्ठा मत करो, जहां तक

हो सके उनको उत्तम से उत्तम शिक्षा दो, और फिर उन्हें संसार में अपना रास्ता आप बनाने दो।

पति को इस बात के लिए तंग मत करती रहो कि वह कंजूसी करके बुढ़ापे के लिए रुपया जमा करे। बुढ़ापे में काम छोड़ बैठने से उसका जीवन कम हो जाएगा क्योंकि संसार में उसे कोई रुचि न रहेगी।

धोबी के खर्च के डर से पति को मैले कपड़े पहनने पर विवश मत करो। खर्च से बचना है तो आप धो दिया करो।

कितनी ही स्त्रियाँ सुई-सलाई जैसी चीजों के लिए भी पति से माँगकर पैसे लेती हैं। इसलिये नहीं कि धन की कमी होती है, वरन् ऐसे पति अपना रौब रखना पसन्द करते हैं। अपने पति का ऐसा बुरा स्वभाव मत पड़ने दो।

इस बात को मत भूलो कि तुम्हें कुछ धन अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने का पूर्ण अधिकार है। पत्नी, माता या घरवाली होकर तुम उसे कमाती हो। अधिक सम्भव यही है कि तुम उसे गृहस्थी या बच्चों पर व्यय करोगी। परन्तु इस बात का कुछ मुजायका नहीं—यह धन तुम्हारा है। तुम जैसे चाहो इसे व्यय कर सकती हो।

पति की उत्तम प्रकृति का अनुचित लाभ मत उठाओ।

वह तुम्हें बहुत प्यारा है, और जो भी तुम माँगती हो दे देता है, ऐसा समझकर उससे कोई अनुचित चीज़ न मांगने लग जाओ।

घर का हिसाब रखने में तकलीफ मत मानो। इस बात का पता रखना आवश्यक है कि तुम्हारा रुपया कहाँ जाता है।

जब कोई बड़ा खर्च करना हो तो पति के साथ सलाह कर लो। साधारण तौर पर छोटे-छोटे कामों में तो स्त्री किफ़ायत कर सकती है, परन्तु बड़े खर्च के काम को पुरुष ही संभाल सकता है।

जहाँ तक हो सके, जो भी वस्तु खरीदो उसका मूल्य साथ-साथ देती जाओ। बिल चुकाना पीछे से मुश्किल होता है।

कंजूसी और किफायत में सदा भेद करो। कमीनी न बन जाओ।

पति यदि अपने जीवन का बीमा कराए तो उस पर आपत्ति मत करो। उसके जीवन का बीमा हो जाने के कारण वह जल्दी नहीं मर जायगा और यदि, परमात्मा न करे, तुम्हें उसके बिना जीवन बिताना पड़ा, तो इसमें तुम्हें बड़ी सहायता मिल जाएगी।

मनु जी का उपदेश है कि स्त्री को खर्च में कभी हाथ खुला नहीं करना चाहिए

५

भार्या के कर्त्तव्य

श्री वात्स्यायन अपने 'काम-सूत्र' में लिखते हैं—

पतिव्रता स्त्री पति के प्रति सच्चा प्रेम रखती हुई सदा उसकी इच्छा के अनुसार आचरण करे।

वह घर को स्वच्छ रक्खे और स्थान-स्थान पर पुष्पों से उसे सजाए। दोनों काल अग्निहोत्र और संध्या-वंदन नियमपूर्वक करे।

सुन्दर और स्वच्छ घर से बढ़कर दूसरी कोई भी चीज पति के चित्त को आकर्षित नहीं करती।

सुसर-सास, जेठ-जिठानी, देवर-देवरानी और दास-दासी आदि के साथ यथायोग्य बर्ताव करो।

भूमि के एक साफ-सुथरे टुकड़े में वह सुन्दर पुष्प-लताएँ और हरे शाक आदि बोए।

अपनी वाटिका में वह गुलाब, चमेली, सतपुष्प जूही, मल्लिका, गेंदा, मोतिया, इत्यादि सुगन्धियुक्त फूलों की पंक्तियां लगाए।

मध्य में एक कुआँ या सरोवर बनवाए। वह दुराचारिणी स्त्रियों से मेल-मिलाप न रक्खे, जैसी कि—

भिक्षुकी—भिखारिन स्त्री, संन्यासिन स्त्री, कुलटा स्त्री, जादूगरनी, हाथ देखने वाली, फलित-ज्योतिषी स्त्री, जादू-टोने और जड़ी-बूटी का काम करने वाली स्त्री।

भार्या को पता होना चाहिए कि मेरा पति या परिवार के दूसरे लोग कौन-से भोजन को पसन्द करते हैं और कौन।से को नहीं करते। और स्वास्थ्य के लिए कौन-सी वस्तु अच्छी और कौन-सी बुरी है।

ज्योंही वह पति या घर के किसी दूसरे वृद्ध के बाहर से आने की आवाज़ सुने, झट उसकी सेवा के लिए तैयार हो जाए।

दासी को हटाकर आप पति के चरण धोवे।

एकान्त में पति के पास गहने और कपड़े से शरीर को सजाए बिना कभी मत जाय।

पति बहुत अधिक या अनुचित व्यय करता हो तो एकान्त में उसे समझाये।

जिस घर में विवाह हो रहा हो वहां दूल्हा या दुल-

हिन को देखने के लिए और उत्सव, मेले या सभा में पति की आज्ञा के बिना कभी न जाय।

वह केवल ऐसे ही खेल-तमाशे और मनोरंजन में भाग लें जो उसके पति की इच्छा के अनुकूल हों।

पति के बाद सोना, उसके पहले उठना और निद्रा से उसे जगाना—ये सब उसके कर्तव्य होने चाहिएं।

रसोई-घर में हर कोई न जाने पावे। वह साफ-सुथरा और मनोहर हो।

यदि पति के किसी दोष से वह किसी समय कुछ रुष्ट भी हो जाए तो इसके लिए उसे पति के साथ बहुत झगड़ा नहीं करना चाहिए।

हां, जब वह अकेला हो, या केवल उसके मित्र ही बैठे हों, तब वह उसे अधिक कड़े शब्दों में भी धिक्कार सकती है। परन्तु कभी भी जादू-टोने या औषध आदि के द्वारा पति को वश में करने का यत्न नहीं करना चाहिए।

यदि पति को संदेह हो गया कि वह मुझ पर जादू-टोना करती है तो उसका सारा विश्वास स्त्री पर से उठ जाएगा।

पत्नी इन बातों से परहेज करे :—

कड़वी और कर्कश बात, पति पर प्रीतिशून्य दृष्टि

डालना, पर-पुरुष के साथ एकांत में बातें करना, बार-बार द्वार पर खड़ी रहना या उसमें से झांकना, कुञ्ज में किसी के साथ गुप्त वार्तालाप करना, या निर्जन स्थानों में बहुत देर तक ठहरी रहना।

उसे ध्यान रहना चाहिए कि पसीने, दुर्गन्ध और गन्दे दांतों को देखकर पति को उससे अरुचि हो जाएगी, इसलिए उनको दूर करने का उसे उपाय करना चाहिए।

अनेक प्रकार के आभूषण, सुन्दर साफ वस्त्र, नाना प्रकार के फूलों की माला, इत्र आदि का सेवन करने से पति को प्रसन्नता प्राप्त होती है।

जब उसका पति भूखा रहना या भूमि पर सोना आदि कोई व्रत करे तब वह भी वैसा ही करे। यदि पति उसे ऐसा करने से रोके तो वह कहे कि मैं नहीं मानने की। ऐसा कहकर वह उसके शब्दों की परवाह न करती हुई भी उसका अनुसरण करे।

वह उपयुक्त समयों पर मिट्टी और धातु के बर्तन, टोकरियां और घर की दूसरी आवश्यक खाने की चीजें उचित मूल्य पर इकट्ठी करे।

अपने धन, पति के परामर्श (सलाह-मशविरे) और उसके कामों की किसीसे कुछ चर्चा न करे।

वह चतुराई, चौंसठ कलाओं के ज्ञान, रूप, भोजन

बनाने की विद्या, सुशीलता और पति-सेवा में अपनी जाति और आयु की दूसरी स्त्रियों से बढ़ जाए।

वह अपनी वार्षिक आय और व्यय पर विचार करे।

वह दूध से मक्खन निकाले, सूत कातकर कपड़ा तैयार करे, नौकरों के वेतन का ध्यान रक्खे, खेती-बाड़ी और पशुओं की सुध लेती रहे। पालतू तोते, मोर, चकोर हिरण, बन्दर, मैना इत्यादि के दाना-पानी की खबर लेती रहे। प्रतिदिन की आमदनी और खर्च का जोड़ निकाले।

अपने और अपने पति के पुराने वस्त्रों को धुलाकर दुबारा रंगवा ले और फिर उन्हें अपने स्वामिभक्त दास और दासियों को उपहार में दे दे, या किसी दूसरे काम में ले आए।

पति के मित्रों का पान, इलायची, सुपारी और इत्र आदि से यथायोग्य सत्कार करे।

सास-सुसर की सेवा करे, उनके साथ झगड़ा न करे। मीठी और कोमल वाणी बोले, और बहुत जोर से न हँसे।

पति के मित्रों और शत्रुओं को अपना मित्र और शत्रु समझे। धन और धान्य की प्रचुरता पर अभिमान न करे।

दास-दासियों और अपने आश्रित व्यक्तियों की

आवश्यकताओं का ध्यान रक्खे।

पति को बताये बिना किसी को कुछ न दे।

नौकरों को अपने कामों पर लगाए और पर्व, उत्सव आदि के अवसर पर उन्हें पुरस्कार दे।

ये पति के साथ रहती हुई भार्या के कर्तव्य बतलाये गये हैं। अब पति से अलग होने पर उसे कैसे रहना चाहिये, सो सुनिये—

पति की अनुपस्थिति में, अर्थात् जब पति घर पर न हो, तब केवल वही गहने पहने, जिनका धारण करना सुहाग तथा मंगल के चिह्नों के तौर पर आवश्यक है। परमात्मा की उपासना में मग्न रहे, व्रत आदि करे और पति के आदेश के अनुसार घर की देख-रेख करे।

पति की अनुपस्थिति में वह सास या जिठानी आदि बड़ी स्त्रियों के चरणों में सोवे और प्रत्येक काम उनकी इच्छानुसार करे।

दैनिक और नैमित्तिक काम पर यथोचित खर्च करे। पति के आरम्भ किये हुए काम को, उसके लौटने के पूर्व पूरा करने का प्रयत्न करे। विवाह या मृत्यु के अवसर के सिवाय मायके कभी न जाय। इन अवसरों पर भी पति के नौकर को साथ लेकर जाय और पति के चले जाने के बाद से जैसे वस्त्र वह पहन रही है और जिस ढंग से वह

रहती है। उसमें कुछ परिवर्तन न करे। मायके में बहुत देर न रहे। खर्च में मितव्यय (किफायत) करके और ईमानदार तथा विश्वासपात्र नौकरों के द्वारा खरीदने और बेचने का काम करके परिवार के धन को बढ़ाने का यत्न करे।

पति के लौटने पर उसे उन्हीं कपड़ों में मिले। फिर उसके कुशलपूर्वक लौटने पर जगदीश्वर को धन्यवाद दे।

६

पतिव्रत धर्म

आर्य स्त्रियां सदा से सतीत्व और पतिव्रत के लिए संसार में आदर्श रही हैं। इस लोक में अक्षय कीर्ति और परलोक में सद्गति देने वाले इस पुनीत धर्म का तुम कभी परित्याग न करो।

पतिव्रता मैली भली, काली कुचिल, कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर, वारो कोटि स्वरूप॥

स्त्री और पुरुष के व्यभिचार में पड़ जाने से संसार में दुख बढ़ जाता है और समाज की व्यवस्था बिगड़ जाती है। इसलिए ऋषियों ने स्त्री के लिए पतिव्रता होना परम धर्म ठहराया है। मनु जी कहते हैं—

"पति ऋतुकाल और बिना ऋतुकाल में सदा सुख देने वाला है। पति की सेवा करने वाली स्त्री इस लोक तथा परलोक में सुखी रहती है।

"स्त्री को चाहिये कि पति शील-रहित, कामी और विद्यादि गुणों से रहित भी क्यों न हो, वह सदा देवता के तुल्य उसकी आज्ञा के पालन तथा सेवा में तत्पर रहे।

"पति-सेवा से अलग स्त्रियों का न कोई यज्ञ, न कोई व्रत और न कोई उपवास है। केवल एक पति-सेवा ही से वे स्वर्ग अर्थात् सद्‌गति को प्राप्त हो जाती हैं।

"सर्वोत्तम पतिव्रत-धर्म की इच्छा करती हुई स्त्री पति के मरने पर क्षमा और नियम वाली होकर मरने तक ब्रह्मचारिणी रहे। वह पुत्रहीन होने पर भी स्वर्ग को प्राप्त हो जाती है।

"जो स्त्री अपने निकृष्ट पति को छोड़कर दूसरे रूप और धन वाले पुरुष का सेवन करती है, उसकी लोक में निन्दा होती है। वह अनेक भयानक रोगों में फँसकर अन्त को मरने के बाद गीदड़ की योनि को प्राप्त होती है।"

आर्या अनुसूया ने पतिव्रत-धर्म की पवित्र मूर्ति सीता जी को उपदेश देते हुए कहा था—"हे सीते! पति नगर में हो या वन में हो, अनुकूल हो या प्रतिकूल हो, जिन स्त्रियों को भर्ता प्यारा है, उनको बड़े उच्च लोक प्राप्त होते हैं।

कठोर स्वभाव वाला, अपनी ही इच्छा के अनुसार चलने वाला, धनों से रहित पति भी श्रेष्ठ स्वभाव वाली

स्त्रियों के लिए परम देवता होता है। जो स्त्री पातिव्रत आदि गुणों से पूर्ण है, वह स्वर्ग को पाती है।"

एकै धर्म एक व्रत-नेमा,
काय-वचन-मन पति-पद प्रेमा।
बिनु श्रम नारि परमगति लहईं,
पतिव्रत-धर्म छांड़ि छल गहईं।

इसी प्रकार द्रौपदी ने सत्यभामा को उपदेश देते हुए कहा है—

जो चाहो कि प्रीतम हो अपना,
पति-नाम की माला सदा जपना।
न देखो कभी पर का सपना,
तब जानो वह देह पवित्र भई।

पद्मपुराण में पतिव्रता स्त्री के लक्षण बताते हुए कहा है—

"जो पति पर पुत्र की अपेक्षा सौ गुणा अधिक स्नेह रखती और डर मानती है, वही पतिव्रता है।

जो भर्ता के लिए कार्य में दासी के समान, रति में वेश्या के समान, तथा भोजन खिलाने में माता के समान है, और जो विपत्ति में सलाह देने वाली मंत्रिणी है, वही भार्या पतिव्रता है।

जो मन, वचन और शरीर से पति की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करती, और पति के भोजन कर चुकने के

पश्चात् आप खाती है। वह भार्या पतिव्रता है।

जिस-जिस जगह पति शय्या पर सोता है, वहां-वहां जो यत्न से नित्य पूजा करती है, जिसमें न मत्सरता है, न कृपणता है, और न अभिमान है, पति चाहे उसका मान करे चाहे न करे, जो दोनों अवस्थाओं में उसे समान दृष्टि से देखती है, वह पतिव्रता है।

जो दूसरे पुरुष को सुन्दर वेश में देखकर भाई, पिता या पुत्र के समान मानती है, वही परम साध्वी भार्या पतिव्रता है।

विवाह संस्कार की समाप्ति पर विद्वानों ने तुम्हें जो यह आशीर्वाद दिया था, इसकी पात्र बनो—

"दिलीप के लिए जैसी सुदक्षिणा थी, हरिश्चन्द्र के लिए जैसी शैव्या थी, राम के लिए जैसी जानकी थी, भर्ता के लिए वैसी ही तू हो!

"वसिष्ठ के लिए जैसी अरुन्धती थी, कश्यप के लिए जैसी विनता थी, कृष्ण के लिए जैसी रुक्मिणी थी, पति के लिए वैसी ही तू हो!

"नल के लिए जैसी दमयन्ती थी, वसुदेव के लिए जैसी देवकी थी, और अगस्त्य के लिए जैसी लोपामुद्रा थी, भर्ता के लिए वैसी ही तू हो!

"अर्जुन के लिए जैसी सुभद्रा थी, धृतराष्ट्र के लिए

जैसी गान्धारी थी, पांडवों के लिए जैसी द्रौपदी थी, भर्ता के लिए वैसी ही तू हो!

"गौतम के लिए जैसी अहिल्या थी, बालि के लिए जैसी तारा थी, और रावण के लिए जैसी मन्दोदरी थी, भर्ता के लिए वैसी तू हो!

"अत्रि के लिए जैसी अनुसूया थी, जमदग्नि के लिए जैसी रेणुका थी, और दुष्यन्त के लिए जैसी शकुन्तला थी, भर्ता के लिए वैसी तू हो!

"सत्यवान के लिए जैसी सावित्री थी, पांडुराज के लिए जैसी कुन्ती थी और अनिरुद्ध के लिए जैसी उषा थी, भर्ता के लिए वैसी ही तू हो!"

राग ईमन

धनि धनि भारत सती सयानी।
सीता सती सुशीला श्यामा शची सुभद्रा रानी।
सरोजनी ऊषा मन्दोदरि दमयन्ती सुखदानी॥
धनि धनि भारत··· !

साबित्री सतभामा सुन्दरि द्रुपदसुता गुणखानी।
'श्रीकिशोर' भारत की ललना त्रिभुवन सति बखानी॥
धनि धनि भारत··· !

जब पति विदेश में गया हो, तब सप्ताह में एक-दो बार उसे प्रेम-पत्र अवश्य लिखती रहो। इससे तुम दोनों के धर्म की रक्षा होगी। एक दूसरे का प्रेम जाग्रत रहने से

पाप का भाव मन में स्थान न पा सकेगा और दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचे रहेंगे।

दोहावली

जल में बसे कुमोदिनी, चन्दा बसे अकास।
जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास॥

मूरत मेरे पति की, खड़ी रहत है चित्त।
क्या भयो तन न मिल्यो, मन मिल आवत नित्त॥

कागा सब तन खाइयो, चुनचुन खाइयो मांस।
दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस॥

कबीर सीप समुद्र की, रटे पियास पियास।
और बूँद को न गहे, स्वाति बूँद की आस॥

साजन वे दिन कौन थे, तुम पतंग हम डोर।
आई पवन वियोग की, कर गई तोड़ बिछोड़॥

काख भयो तन सूखके, पर है कोई आस।
हे वायु, ले चल अभी, जहाँ पिया का वास॥

साजन तुम मत जानियो, तब बिछुड़त मोहे चैन।
बाजे बन की लाकड़ी, सुलगत हूँ दिन रैन॥

हौं साजन जानत नहीं, पिया बिछुड़न की सार।
जिया बिछुड़न से कठिन है, पिया बिछुड़न की बार॥

लकड़ी जल कोयला भई, कोयला जल भयो राख।
मैं बिरहिन ऐसी जली, कोयला भई न राख॥

चकवा चकवी दो जने इन्हें मत मारो कोय।
ये मारे कर्तार के रैन बिछोड़ा होय ॥
जिन दिन देखे वे सुमन गई सो बीत बहार।
अब अलि रही गुलाब की अपत कंटीली डार॥
पीतम पाती प्रेम की हमसे लिखी न जात।
टपक-टपक आंसू चुवत अक्षर तक बिनसात॥
आग विरह की तन लगी जो जारत सब गात।
नारी देखत वैद के फलका पड़ गये हाथ॥
अरे पपीहा कलमुरे आधी रैन न कूक।
हौले-हौले सुलग रही तू क्यों दीनी फूंक॥
खान न भावे नींद न आवे विरह सताये मोय।
घायल-सी घूमत फिरूं मेरा दर्द न जाने कोय॥

७

सास, जेठानी, देवरानी और ननद के साथ बर्ताव

अपने से आयु और स्थान में बड़ी स्त्रियों का सम्मान करो और उनसे जुदा होने पर जब दुबारा उनसे मिलो तब उनके चरणों में सीस झुकाओ।

वृद्धा सास कुछ कड़े शब्द भी कह दे तो उन्हें शांति से सुन लो। उनमें तुम्हारा हित भरा है। तुम्हारी यह सहनशीलता एक दिन तुम्हें उत्तम फल देगी। यदि तुम सास के साथ गाली-गलौज करोगी तो अपनी बारी पर तुम्हें भी अपनी बहू से सिर के बाल उखड़वाने पड़ेंगे।

पति को उल्टी-सीधी बातें सिखाकर सास-ससुर या देवर-जेठ से लड़ाई कराने का यत्न मत करो। इसका फल अन्त में बुरा होगा।

सेवा और नम्रता से सास-जेठानी का मन वश में करने का यत्न करो। लड़ने-झगड़ने से तुम्हें कभी सुख न मिलेगा।

जेठानी के बच्चों पर अपनी सन्तान से भी अधिक प्रेम करो। उनको नहलाओ-धुलाओ, उनके कपड़े धो दो, बीमार होने पर उनकी सेवा-शुश्रूषा में लग जाओ। इससे उनके माता-पिता तुमसे बहुत प्रसन्न रहेंगे।

माता-पिता की दहेज में दी हुई वस्तुओं का भी सास-जेठानी की आज्ञा लेकर ही उपयोग करो।

जो भी काम करो, सास या जेठानी की आज्ञा लेकर करो।

यदि तुम सास हो तो बहू के साथ पुत्री का-सा व्यवहार करो। उसे बात-बात पर मत दुत्कारो। प्रेम ही उसे तुम्हारी आज्ञाकारिणी बना सकता है।

अपने को उसकी अवस्था में रखकर देखो। तुम भी कभी किसी सास की बहू थीं। यदि तुम्हारी सास भी तुम्हारे साथ ऐसा ही बर्ताव करती तो तुम उसे कैसा समझतीं। तुम्हारी पुत्री भी किसी के घर जाएगी।

बहू में कोई दोष भी हो तो एकांत में प्रेम से उसे बार-बार समझाओ। झिड़कने से तुम घर की शांति नष्ट कर लोगी।

वह तुम्हारे लड़के की पत्नी है। पिता का घर छोड़कर उसने तुम्हारे घर को अपना घर बनाया है, वह किसी दिन घर की स्वामिनी बनेगी। उसका भी तुम्हारे पुत्र पर अधिकार है। इसलिए यदि तुम्हारा पुत्र उस पर प्रेम करे और तुम्हें पहले जितना समय न दे सके, तो 'तूने मेरा पुत्र छीन लिया,' ऐसा कहकर बहू को कोसने न लग जाओ। बहू को धीरे-धीरे घर के सब अधिकार दे दो, ताकि तुम्हारे बाद गृहस्थी का कार्य भली भाँति सँभाल सके।

कर्कशा सास मत बनो। बहू के लिए स्नेहमयी माता बनने का यत्न करो।

यह मत समझ लो कि मुझमें कोई दोष ही नहीं। कई बातों में बहू तुमसे अधिक चतुर हो सकती है!

घर के कामों में बहू की भी सम्मति लो। इसमें तुम्हारा कोई अपमान नहीं। बहू के प्रसन्न रहने से तुम्हारा पुत्र भी तुम्हारी आज्ञा में बना रहेगा।

बहू को एक गुड़िया समझकर सदा उसे सजाने ही में न लगी रहो। कोई भी व्यक्ति दूसरे के हाथ में खिलौना बनना पसन्द नहीं करता। उसे एक विचारशील और स्वतन्त्र व्यक्ति के सदृश आचरण करने दो।

बहू को चाहिए कि ननद के साथ भगिनी का-सा बर्ताव करे। पति को कहकर लोहड़ी, वैशाखी और

श्रावणी आदि त्योहारों पर ननद के घर यथाशक्ति वस्त्र, मिठाई और फल आदि भेजती रहे। किसी समय ननद इस घर को अपना घर समझती थी। परन्तु अब तो वह तुम्हारी आज्ञा के बिना, तुम्हारे बिना बुलाये, इस घर में प्रवेश भी नहीं कर सकती। उसे देवी समझकर उसका पूजन करो, जिससे भाई, बहन और तुममें प्रेम बना रहे। वह तुम्हारी पूज्या सास की बेटी और तुम्हारे पति की बहन है। वह सदा तुम्हारे यहां बैठी न रहेगी। उसको देने से तुम्हारा धन घट न जायगा। परमात्मा तुम्हें और दे देगा।

यदि तुम ननद हो तो घर में अपने स्थान को पहचानो। भाभी का सदा सम्मान करो। अपने माता-पिता और बन्धुओं को छोड़कर उसने इस घर को अपना घर बनाया है। वह इस घर की स्वामिनी है। तुम्हारा घर यह नहीं। इस पर उसी का अधिकार है। तुम्हारा घर तुम्हारे पति का घर है। भाभी के अधिकारों को छीनने का यत्न मत करो। उसके साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा कि तुम चाहती हो कि तुम्हारी ननद तुम्हारे साथ करे। अपनी माता या भाई के पास उसकी चुगली करके अशान्ति मत पैदा करो। वरन् तटस्थ होकर—किसी की तरफदारी न करके—सास-बहू के झगड़ों को शान्त करने का यत्न करो। भाभी की विश्वासपात्रा और प्रीतिभाजन बनो।

८

घर में स्वर्ग

दिन भर के काम के बाद जब पति के घर लौटने का समय हो तब तुम घर पर मौजूद रहो। हो सके तो उस समय कहीं बाहर न जाओ।

घर पहुँचकर वह तुम्हें ढूँढ़ता न फिरे। उसके आने का शब्द सुनते ही उसके स्वागत के लिए द्वार पर आ जाओ।

मुस्कराते हुए मुख से उसका अभिवादन करो। मेरे घर आने से मेरी स्त्री प्रसन्न होती है, यह जानकर पुरुष की सब थकावट दूर हो जाती है।

उसके द्वार में प्रवेश करते ही, अमुक नौकर ने आज यह काम खराब कर दिया, अमुक बच्चे ने आज वह चीज तोड़ डाली, ऐसी अप्रिय बातों की सूची सुनाना न आरम्भ कर दो।

यदि पति तनिक चिड़चिड़ापन दिखलाये, तो उसे डरावना मत समझने लग जाओ। अधिक संभव है कि आज उसे बहुत अधिक काम करना पड़ा है, और वह थकावट से चकनाचूर हो रहा है।

यदि तुम देखो कि वह बहुत थका हुआ है तो व्यर्थ टें-टें करके उसे मत खिझाओ। भोजन के समय उसे चुटकले और हँसी की बातें सुनाओ और कोमल स्वर से बोलो। उसके चुप होने पर टीका-टिप्पणी मत करो। यदि तुम उसकी तबीयत को न समझकर बातें करती जाओगी, तो घर में वह रात सुख की न बीतेगी।

पति को आप पास बैठकर भोजन खिलाओ। तुम्हारे प्रेम से भोजन में रस आ जाएगा। यह काम नौकर पर मत छोड़ो।

अपना सारा समय बच्चों के ही अर्पण न कर दो। कुछ समय पति के लिए भी निकालो। बच्चों को तुम दिन में साथ रख सकती हो। सांझ को जब पति लौटकर घर आए तब तुम्हारा समय उसी की सेवा में लगना चाहिए।

हर वक्त 'बच्चे' की बातें करके पति के जी को न घिना दो। बच्चे का पिता होने के कारण वह इनको बहुत-कुछ सुन लेगा, परन्तु स्मरण रहे कि संसार में और भी दिलचस्पियां हैं।

मत समझो कि तुम्हारा पति केवल घर का काम-काज करने वाली नौकरानी या रसोई बनाने वाली पाचिका ही चाहता है। उसे एक संगिनी की आवश्यकता है। वह नहीं चाहता कि जब वह घर पर हो तो तुम कहीं दूसरी जगह घूम रही हो।

जो समय पति के घर पर रहने का हो वही तुम इधर-उधर घूमकर घर की वस्तुओं की देखभाल करने के लिए न नियत कर रक्खो। उसके पास बैठो। चौसर, ताश या शतरंज खेलो। समाचार-पत्र पढ़कर सुनाओ। उससे किसी रुचिकर विषय पर वार्तालाप करो! गाओ-बजाओ, जैसे भी हो उसे प्रसन्न करो। इस समय हिन्दू-गृहिणियों का जीवन प्रायः चिन्ता में—घर-बार की चिन्ता, बच्चों के विवाह की चिन्ता, धन इकट्ठा करने की चिन्ता में—व्यतीत होता है। गाने-बजाने और हँसने-खेलने को वे लज्जा की बात समझती हैं। जीवन का आनन्द क्या है, इसकी ओर उनका ध्यान तक नहीं। यही कारण है कि हमारे घर चिन्ता और शोक के भवन बन रहे हैं। सबके चेहरों पर उदासी और चिन्ता छाई रहती है। हमारे जल्दी बूढ़े होने और छोटी आयु में मर जाने का एक बड़ा कारण यही है। जीवन को हँसते-खेलते, नाचते-कूदते, और गाते-बजाते व्यतीत करने का यत्न करो। रोते-

धोते दिन काटना अच्छा नहीं। हिन्दू-समाज को शोक-समाज न बनाओ। पुराने आर्य लोग बड़े खुशमिजाज होते थे। श्रीकृष्ण का बाल्य-जीवन यही बता रहा है।

काम करने में दासी, आनन्द देने में रम्भा—रूपवती वेश्या—और सलाह देने में मन्त्रिणी बनने का यत्न करो। केवल दासी ही न बनी रहो। तुम्हारे रम्भा न बनने से ही बहुतेरे पुरुष वेश्या के पास जाने लगते हैं।

यत्न करो कि तुम्हारा पति कारोबार-सम्बन्धी सब चिन्तायें और दफ्तर के झगड़े-झमेले सब घर से बाहर ही छोड़ आए। परन्तु यदि वह तुम्हें कोई चिन्ता की बात सुनाने लगे तो 'इन झगड़ों से मुझे क्या मतलब', उसे ऐसा मत कह दो। वरन् उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुनो। सम्भव है तुम्हें सुनाने से ही उसकी चिन्ता का भार हल्का हो जाये।

दिन भर जो भी छोटी-मोटी खुजली, छींक या रगड़ तुम्हें लगी हो, वह सब पति को सुनाने न बैठ जाओ। हाँ, अपनी सच्ची तकलीफें उसे अवश्य बताओ। वह तुम्हारी सच्ची तकलीफों को बँटाने की इच्छा करता है, और उसके परामर्श से तुम्हें सहायता मिल सकती है। कुछ भी हो, उसकी सहानुभूति से तुम्हारा दुःख आधा रह जायेगा।

प्रेम दर्शाने में लज्जा मत करो। मत समझो कि वह अपने आप मान लेगा कि तुम्हारा उस पर प्रेम है। तुम्हारी प्रेमभरी चितवन से उसकी ओर कटाक्ष करना, या मन्द मुस्कान के साथ बात करना, उसके मन को जितना मुग्ध कर देगा उतना दिन भर घर के काम में लगा रहना न कर सकेगा।

चौंसठ कलाओं का ज्ञान पति को प्रसन्न रखने में बहुत सहायता देगा।

यदि तुम घर को पति के लिए सुखमय नहीं बना सकोगी तो वह अपना अधिक समय दूसरी जगह बिताना पसन्द करेगा। यही कारण है कि बहुत-से पति केवल भोजन करने आध घंटे के लिए ही घर आते हैं। उन्हें घर में कुछ आनन्द नहीं आता। कितने ही पति तो भोजन भी दुकान पर ही मंगाते हैं। घर को ऐसा सुख-मय और स्वर्ग का नमूना बनाओ कि कारोबार से फुर्सत मिलने पर पति एक मिनट भी बाहर रहना पसन्द न करे। वह चटपट घर की ओर खिचा चला आये। घर को स्वर्ग बनाने के लिए धन की आवश्यकता नहीं, तुम्हारे मन और प्रेम की है। रामपुर के नवाब ने एक बार कहा था कि हजारों रुपये खर्च करने पर भी जो सुख मुझे घर में नहीं मिल रहा, वह मेरे अंग्रेज कोचवान को उसकी सुशीला और बुद्धिमती पत्नी के प्रताप से प्राप्त

है। उसका घर उसके लिए स्वर्ग से बढ़कर है।

कलह करने वाली स्त्री लाखों की जायदाद होने पर भी घर को नरक की भट्टी बना देती है। पतिव्रता और मृदुभाषिणी (मीठा बोलने वाली) दरिद्र होने पर भी अपने स्निग्ध व्यवहार से—प्रेम-बर्ताव से—इस मृत्युलोक में सुरलोक का सुख प्राप्त करा देती है।

पति की बातचीत और हँसी-दिल्लगी में दिलचस्पी लो। ऐसा न हो कि वह शौक से तुम्हें कोई बात सुनाये और तुम जँभाई लेने या सोने लग जाओ। उसकी बात पर तुम्हारे ध्यान न देने से बढ़कर उसके लिए और कोई बात निराशाजनक नहीं हो सकती।

उसकी दिल्लगी और ठट्ठा चाहे कितना ही भद्दा और निकम्मा क्यों न हो, तुम उस पर प्रसन्नता अवश्य प्रकट करो! तुम्हारे मुस्करा देने से तुम्हारा कुछ बिगड़ न जाएगा।

घर में बहुत गम्भीर और गृहस्थी के नीचे दबी हुई-सी मत रहो। अपने पति के लिए प्रसन्नता और आनन्द का प्रकाश फैलाओ।

सन्तान उतनी पैदा करो, जितनी का तुम पालन-पोषण और शिक्षण भली भांति कर सकती हो। नहीं तो तुम्हें भारी दुःख होगा।

६

विनोद

यदि पति वायु-सेवन या सैर के लिए तुम्हें अपने साथ बाहर चलने को कहे तो झूठी लज्जा के डर से साथ जाने से इन्कार मत करो। घर से बाहर खुली वायु में घूमने से तुम्हारा स्वास्थ्य सुधरेगा।

अपने विवाह की वर्षगाठ मनाया करो। विवाह में तुमने जो-जो परस्पर प्रतिज्ञाएं की थीं, उनपर उस दिन विचार करो। इससे तुम दोनों का सम्बन्ध अधिक दृढ़ होता जाएगा।

जन्म-दिन मनाना एक बाल-स्वभाव मत समझो। पति का जन्म-दिन मनाने से वह मन-ही-मन प्रसन्न होगा। उस दिन अपनी सामर्थ्य के अनुसार गरीबों को रोटी बांटो और पति के प्रिय मित्रों को प्रीति-भोजन के लिए न्योता दो।

यदि तुम्हारे पति को फूल लगाने, तोता रखने या किसी और ही चीज़ का शौक है तो तुम भी उसमें रुचि दिखलाओ। उसे इन कामों में सहायता दो, परन्तु शेष सारा काम उसे आप करने दो।

छुट्टियों में पर्वत-यात्रा या तीर्थ-यात्रा के लिए घर से बाहर जरूर जाओ। रुपया बचाने के विचार से इन दिनों में पति को घर में ही लुढ़कते रहने की सलाह मत दो। जलवायु और दृश्यावली के बदलने से तुम दोनों के स्वास्थ्य को जो लाभ पहुँचेगा, वह उस रुपये से कहीं अधिक अच्छा रहेगा।

यदि तुम्हारा पति किसी शान्त स्थान में रहकर छुट्टी बिताना चाहता है, तो उसे हठपूर्वक बम्बई और कलकत्ता ले चलने के लिए तंग मत करो।

यदि तुम्हारा पति तुम्हें ब्रह्मदेश या अफ्रीका ले जाना चाहता है तो उसके साथ विदेश जाने से इन्कार मत करो।

यदि तुम पति के विनोद में भाग नहीं लेतीं, तो उससे भी आशा न करो कि वह तुम्हारे विनोद में भाग लेगा। यदि तुम हरिद्वार रहना पसन्द करती हो और वह कराची जाना चाहता है, तो तुम दोनों को एक-दूसरे के लिए कुछ त्याग करना चाहिए। कुछ देर बाद तुम्हें यह देख-

कर आश्चर्य होगा कि तुम दोनों की रुचियां बहुत अधिक उदार हो गई हैं।

पति के साथ लम्बी सैर पर जाने से इसलिए इन्कार न कर दो कि रास्ते में वर्षा हो जाएगी या मेरे पास उपयुक्त वस्त्र नहीं। यात्रा के भाव को ग्रहण करने का यत्न करो। तुम्हें साधारण वस्त्र धारण करके भी वैसा ही आनन्द आएगा जैसा कि शौकीन स्त्रियों का किसी मंडली में रहते हुए दिन में तीन-तीन पोशाकें बदलने से आता है।

जो लोग यह कहते हैं कि स्त्री का काम पुराने समयों की तरह घर पर रहकर जुराबें रफू करना और भोजन बनाते रहना है, उनकी बात पर ध्यान मत दो। पति के साथ सैर करके भी तुम्हें इन सब बातों के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा। प्राचीन स्त्रियाँ सदा पति के अंग-संग रहा करती थीं। यदि सैर करने से ही तुम्हें कोई मेम-साहब कहने लगता है, तो मेम बनने में कोई हानि नहीं। दूसरी जातियों से उत्तम गुण अवश्य सीखने चाहिएं।

सदा घर की बातों का ही चिन्तन न करती रहा करो। घर से बाहर की बातों में भी दिलचस्पी रक्खो। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग, महात्माओं की कथा, व्याख्यान, उत्सव, प्रदर्शनी, स्त्री-समाज इत्यादि में अवश्य जाया करो। इससे मन दूसरी ओर जाता है और घर की

थकावट दूर होती है। घर ही के काम में फँसे रहने से चित्त ऊब जाता है, जीवन नीरस-सा जान पड़ने लगता है और रोग आ दबाते हैं। सभा-समाज में जाने से तुम्हारा चित्त प्रसन्न होगा और जब तुम लौटकर पति के पास आओगी तो तुम्हारा मुखमण्डल उदास होने के स्थान में खिला हुआ होगा।

घर में घुसे रहने से ही आजकल क्षयरोग आदि भयंकर व्याधियां बढ़ रही हैं। इसलिए प्रतिदिन घण्टा-डेढ़ घंटा बाहर अवश्य घूम आया करो।

यह मत कहो कि मैं वच्चों को छोड़कर पति के साथ घूमने नहीं जा सकती। ऐसा प्रबन्ध करो जिससे उन्हें सुरक्षित रूप से संतोषजनक हाथों में छोड़कर जा सको।

जीवन को सादा बनाओ। अंग्रेज स्त्रियों की अच्छी बात ले लो, परन्तु ऊँची एड़ी का बूट, चुस्त और तंग कपड़े, आदि उनकी हानिकारक बातें मत लो। सादे जीवन से आयु बढ़ती और बनावटी जीवन से आयु घटती है।

१०

भोजन

उत्तम भोजन बनाना सीखो। जो स्त्री नाना प्रकार के स्वादिष्ट और आरोग्य-वर्धक (तन्दुरुस्ती को बढ़ाने वाले) भोजन बनाना जानती और बनाती है, वह पति की, बच्चों की और अपनी आयु को बढ़ाती है।

दूसरी स्त्रियों से सदा नये-नये प्रकार के भोजन बनाना सीखने का यत्न करती रहा करो। जिससे कोई नया गुण मिले, लेने का यत्न करो। स्वादिष्ट भोजन बनाकर प्रेमपूर्वक खिलाना, रूठे पति को मनाने की एक उत्तम विधि है।

रसोई-घर को शुद्ध और पवित्र रक्खो, जिससे वहाँ बैठकर भोजन करने में आनन्द प्राप्त हो।

इस बात को जानने का यत्न करो कि तुम्हारे पति के लिए कौन-सी चीज़ रुचिकर और हितकर है और कौन-

सी चीज़ उनके अनुकूल नहीं। फिर उसे सदा हितकर भोजन ही दो।

यदि लाल मिर्च तुम्हें अच्छी लगती है परन्तु उसको इसके खाने से हानि है, तो दाल-भाजी में लाल मिर्च मत डालो। तुम अपने लिए चाहो तो अलग रख सकती हो।

आलू-गोभी से यदि उसे कब्ज हो जाती है, तो इन चीज़ों को पकाकर उसे व्यर्थ दुःख मत दो।

पति यदि मीठे चावल पसन्द करता है तो नमकीन चावल न बना लिया करो।

जब तक पति भोजन समाप्त न कर ले, उसे कोई शोक और चिन्ता की बात मत सुनाओ।

भोजन सदा ठीक समय पर तैयार करो। भूखे मनुष्य के लिए भोजन की प्रतीक्षा में बैठने से बढ़कर चिढ़ने वाली बात और दूसरी नहीं।

पति को पौष्टिक पदार्थ—बल को बढ़ाने वाली चीज़ें—खिलाओ। नहीं तो वह दिन भर काम कैसे कर सकेगा?

यदि पति गरम रोटी पसन्द करता है तो उसे ठण्डी और बासी खाने पर मजबूर मत करो।

यदि घर में रोटी बनाने वाला नौकर है तो भी भोजन पर निरीक्षण, देख-रेख, अवश्य रहना चाहिए।

कपड़ों की अपेक्षा खाने पर अधिक खर्च करो।

खाने में कंजूसी करना हानिकारक है। हिन्दुओं की दुर्बलता का एक बड़ा कारण यह है कि ये अधेले की दाल खाकर पैसे जमा करते हैं।

जब भोजन परोसने बैठो, तब सबको एक दृष्टि से देखो। यह न हो कि पति के लिए तो विशेष चीजें हों और देवर तथा जेठ आदि के लिए साधारण भोजन। जो भी चीज़ पके, थोड़ी-थोड़ी सबको दो।

पहले बच्चों को खिलाओ, फिर नौकर को और फिर आप खाओ। सास-ससुर को खिलाने के बाद ही आप खाओ।

पति का बचा-खुचा खाना खाकर ही पेट न भर लो। इसमें कोई बड़ी पति-भक्ति नहीं। अपने शरीर को पुष्ट बनाये रखने के लिए दूध-घी आदि पौष्टिक पदार्थ अवश्य खाया करो। यदि तुम तन्दुरुस्त और मज़बूत बनी रहोगी तो तुम्हारा पति और सन्तान सुखी रहेगी। पौष्टिक भोजन न खाने से तुम शीघ्र ही बूढ़ी होकर मर जाओगी। इससे तुम्हारे परिवार को अपार दुःख भोगना पड़ेगा।

११

वेश

वस्त्रों का मुख्य उद्देश्य गरमी और सरदी से शरीर की रक्षा करना है। उनका सुन्दर लगना गौण बात है। इसलिए वस्त्र बनवाते समय सुन्दरता की अपेक्षा उसकी उपयोगिता का अधिक ध्यान रक्खो।

भारत-जननी की सच्ची सुपुत्री कहलाने के लिए यत्न करो कि तुम्हारे घर में कोई विदेशी कपड़ा न आने पाए।

जापान और अमरीका आदि की देवियों ने इसी प्रकार अपनी जन्मभूमि की सेवा करके उसके उद्धार में देश-भक्तों को सहायता दी है।

'खाइये मन-भाता, और पहनिये जग-भाता' यह कहावत भी ध्यान में रहनी चाहिए।

जिन वस्त्रों को तुम घर पर सी सकती हो, उन्हें दरजी के यहां सिलाकर खर्च मत बढ़ाओ।

बच्चों के कपड़े तो सब घर पर ही सी लेने चाहियें।

जब बड़े लड़के का कोट छोटा हो जाय तब उसे काटकर छोटे को पहना दो। पति की पुरानी पगड़ी को धुलाकर तुम अपने लिए दुपट्टा बना सकती हो। इस प्रकार बुद्धिमत्ता से काम लेने से तुम कपड़े के खर्च में किफायत कर सकती हो। अच्छी गृहिणियां ऐसा ही किया करती हैं।

कपड़े सदा साफ-सुथरे रक्खो। यदि तुम धोबी का खर्च नहीं दे सकतीं तो घर पर साबुन से आप ही धो लिया करो। धोबी का धुला हुआ कपड़ा जब मैला होने लगे तब उसे झट साबुन से साफ कर लो। बहुत मैला हो जाने पर वह साफ न हो सकेगा। जब दो एक बार उसे घर पर धोकर पहन चुको तब फिर उसे धोबी के यहां भेज दो, क्योंकि अब वह घर पर धोने से साफ नहीं होगा।

बच्चों में साफ-सुथरा रहने का स्वभाव डालो। प्रत्येक बच्चे के पास हाथ-मुँह पोंछने के लिए रूमाल रहना चाहिए। यह रूमाल दूसरे तीसरे दिन धुलता रहना चाहिए।

दिन और रात के कपड़े अलग-अलग होने चाहिएँ। जो वस्त्र शरीर के साथ लगा रहता है, उसे दूसरे दिन अवश्य धो डालना चाहिए।

बच्चों के कपड़े ऐसे बनवाओ जो उनके शरीर पर ठीक आ जायँ। ऐसा न हो कि तीन वर्ष के बच्चे का

कोट इतना बड़ा बन जाय कि वह छठे वर्ष में उसके शरीर पर ठीक आए, या इतना तंग हो कि उसका शरीर उसमें कसा रहे।

जो स्त्री मैली रहती है, वह न केवल अपने लिए रोगों को बुलाती है वरन् पति के लिए अपमान का कारण है। उसके कारण पति को अपने मित्रों में लज्जित होना पड़ता है।

बाजार जाते समय साफ-सुथरे मनोहर वेश में न रहोगी तो डर है कि कहीं पति के मन से न उतर जाओ। घर में पत्नी के शृङ्गार आदि न करने से कितने ही पुरुष सदाचार से गिर जाते हैं। तुम्हें सोलह शृङ्गारों का ज्ञान होना चाहिए। मैली साड़ी, बिखरे हुए बाल और मक्खियों से भरी हुई कुरती को देखकर पति का मन तुम्हारी ओर खिंच नहीं सकता। शरीर की सजावट या शृङ्गार करने को वेश्यापन मत समझो। गहने कपड़े से शरीर को सजाना सधवा युवतियों का धर्म है।

१२

प्रीति-भोज और मेल-मिलाप

त्योहार और पर्व के अवसर पर कभी-कभी अपनी सहेलियों, सम्बन्धियों तथा पति के मित्रों को बुलाकर प्रीति-भोजन अवश्य किया करो। इससे प्रेम बढ़ता है और सामाजिक जीवन सरस बनता है।

तुम्हारे यहां कोई सौगात आये तो अकेले ही न खा लो। थोड़ी-थोड़ी अपने पड़ोसियों और इष्ट मित्रों के यहां भी बांट दो।

यदि हमें कोई दूसरा प्रीति-भोजन पर बुलाएगा तभी हम उसे बुलाएंगे, यह विचार ठीक नहीं। तुम उसे न्योता देकर अपना कर्तव्य पालन करो। अदले का बदला देने का भाव अच्छा नहीं। तुम्हारी सहेलियां, तुम्हारे भाई-बन्द और तुम्हारे पति के मित्र भूख से मर तो नहीं रहे जो तुमसे मांगने आयेंगे। यह तो प्रेम का सौदा है।

अमुक परिवार ने प्रीति-भोजन में बहुत बहुमूल्य पदार्थ खिलाये थे, हममें वैसे खिलाने की सामर्थ्य नहीं, इस विचार से प्रीति-भोजन देने से मत डरो। तुम्हारे पास जो रूखा-सूखा है वही प्रेम से परोस दो। अक्सर कीमती फल और मिठाइयाँ उतनी सुखदायक नहीं सिद्ध होतीं, जितना कि प्रीति से दिया हुआ साधारण जलपान।

दूसरों का अनुसरण (नकल) करते हुए प्रीति-भोजन में अपनी सामर्थ्य से बढ़कर कभी खर्च मत करो। प्रीति-भोजन का उद्देश्य प्रेम बढ़ाना है, न कि दुःख मोल लेना।

प्रीति-भोजन देने के लिए कोई विशेष अवसर न ढूँढ़ती रहो। कोई भी दिन इसके लिए उपयुक्त हो सकता है।

पाहुनों को घर में पूरी-पूरी स्वतन्त्रता दो। तुम्हारे संकोच और बन्धनों से तंग आकर वे अपने को कैदी ही न समझने लगें।

पाहुनों के दिल-बहलाव की चीजें मौजूद रक्खो। शतरंज, ताश, बाजा, समाचार-पत्र, उपन्यास इत्यादि का प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए। यदि उनका दिल लगा रहेगा तो तुम्हारे उनके पास बैठने की भी आवश्यकता नहीं। उनके बच्चों को बहलाने के लिए खिलौने मँगा रक्खो।

अड़ोस-पड़ोस और भाई-बंदों में कोई रोगी या शोक में हो तो उसके पास जाकर समवेदना—दुःख में दुःख—प्रकट करो और जहां तक बन सके सहायता दो। दुखिया के प्रति सहानुभूति के दो शब्द घाव पर मरहम का काम करते हैं।

१३

गृह-प्रबन्ध

अपनी माता के पुराने ढंगों पर नाक मत चढ़ाओ। वे तुम्हारे पिता के बहुत अनुकूल थे। शायद तुम उनसे कई बातों में शिक्षा ले सकती हो।

अपनी सास के पुराने तरीकों पर नाक न चढ़ाओ। इससे तुम्हारे पति और उसकी माता, दोनों का दिल दुखेगा।

पति के सुख के लिए तुम्हें कितना भी कड़ा काम करना पड़े, उसमें कष्ट न मानो। याद रखो, तुम्हारी खातिर वह दिन भर काम में जुता रहता है। उसके सुख के लिए नई कल्पनाएं और उपाय सोचती रहो।

कूड़ा-करकट फेंकने के लिए घर में एक विशेष स्थान नियत कर रक्खो और बच्चों को समझा दो कि जो

चीज फेंकनी हो, उसी जगह फेंकें, सब कहीं स्थान मैला न करते फिरें।

पति के सम्बन्धियों के साथ झगड़ा मत करो। यदि तुम्हारी उनके साथ किसी प्रकार भी नहीं पट सकती तो पति को कहो कि किसी दूसरे नगर में काम ढूंढ़ ले, और तुम उसके साथ वहां चली जाओ। परन्तु यदि तुम तनिक युक्ति और सहनशीलता से काम लोगी तो तुम कर्कशा से कर्कशा सास के साथ भी शान्तिपूर्वक रह सकोगी। सेवा और नम्रता से कौन वश में नहीं हो जाता?

बाहर वालों को घर की बातों में दखल मत देने दो। पति-पत्नी की लड़ाई को कोई भी तीसरा व्यक्ति नहीं मिटा सकता। तुम्हारी माता भी इसमें कुछ न कर सकेगी। वरन् उसके दखल देने से पति के अधिक चिढ़ जाने का डर है। परन्तु—

अनुभवी स्त्री-पुरुषों के उत्तम उपदेश को अवश्य सुनो, हो सके तो उन पर आचरण भी करो।

यदि तुम्हारा पति कह दे कि जैसा माता के बनाए भोजन में आनन्द आया करता था वैसा अब नहीं आता, तो क्रुद्ध मत हो जाओ। वरन् उससे नम्रतापूर्वक पूछो कि वे क्या-क्या बनाया करती थीं और किस-किस तरह बनाया करती थीं?

लकीर की फकीर मत बनी रहो। नई-नई रीतियां

और विधियाँ सीखने में सदा तत्पर रहो ।

घर के द्वार और खिड़कियां बन्द करके मत बैंठो । कमरों में स्वच्छ वायु और प्रकाश खूब आने दो । जहाँ ये दो चीज़ें नहीं जातीं वहां वैद्य जाता है ।

बच्चों को प्रतिदिन दातुन, स्नान और सन्ध्योपासना करने का स्वभाव डालो ।

अपने दरिद्र पड़ोसियों को मत भूलो । यदि प्रत्येक सम्पन्न परिवार जिसके पास परमेश्वर की कृपा से खाने के लिए काफी है, कम से कम एक भी दरिद्र परिवार का ध्यान रखे तो देश का बहुत-सा दुःख कम हो जाय ।

गृहस्थी की गाड़ी को शान्तिपूर्वक चलाने के लिए कभी-कभी तेल अवश्य देती रहा करो । यदि तुम नौकरों को सन्तुष्ट नहीं रख सकतीं, तो उन्हें निकालकर दूसरे रख लो । उनके छोटे-छोटे अपराधों के लिए उनको पति के सामने झिड़ककर घर में अशान्ति मत पैदा करो । उन्हें जो कुछ डांट-डपट करनी हो, परोक्ष में—अलग ले जा कर—कर लो । पति के सामने कचहरी मत लगा बैठो । वास्तव में नौकर जितना काम प्रेम और युक्ति से देते हैं, उतना डांट-डपट करने से नहीं देते । प्रेम से उनके मन पर शासन करो ।

पति की बैठक साफ करने के बाद उसकी सब चीजें पहले की तरह रख दो । उन्हें इधर-उधर गलत जगह

पर रख देने से पुरुष झुंझला उठते हैं।

बर्तन मांजने, कपड़े धोने और घर की सफाई करने में हाथों के मैला हो जाने से मत डरो। घर का काम करने में कोई अपमान नहीं है। वरन् इस बात पर तुम गर्व कर सकती हो कि जो काम मैं स्वयं कर सकती हूँ, उसको नौकर से कराने का कभी यत्न नहीं करती।

घर के काम में ही न मरी रहो। कितनी ही स्त्रियां दुःखी रहने ही में सुख समझती हैं। परन्तु उनके पति इस स्वभाव को पसन्द नहीं करते। रोनी सूरत को देखने से बढ़कर दुःखदायक बात और क्या हो सकती है।

'चोटों की प्रारम्भिक चिकित्सा' जरूर सीख लो। गृहस्थ-जीवन में पट्टी बाँधने, घाव धोने, मोच निकालने आदि का अवसर कभी न कभी अवश्य पड़ता है। ठीक ढंग से बांधी हुई पट्टी गलत तरीके से बाँधी हुई से कहीं अधिक लाभदायक होती है।

जहाँ तक हो सके घर के काम को घटाने का यत्न करो। सफाई आदि का काम इतना न बढ़ा लो कि विश्राम के लिए समय ही न मिले।

जिस दिन पति को छुट्टी होती हो वही दिन घर की बड़ी सफाई के लिए न नियत करो। इधर-उधर चीजें बिखरी हुईं और कमरा गर्द से भरा हुआ देखकर पुरुष की तबीयत बहुत घबराती है।

१४

संतान

बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दो। पति के साथ सलाह करके उनमें अच्छी आदतें डालने की विधियाँ सोचो। इस विषय में मेरी लिखी हुई 'बालक' नामक पुस्तक से तुम्हें बहुत सहायता मिल सकेगी।

पहली सन्तान हो जाने पर पति को अपने बच्चों का केवल पिता ही न बन जाने दो। जैसे पहले तुम, पति होने के कारण उस पर प्रेम और उसकी सेवा किया करती थीं, उसमें अब कमी न आने पावे। हिन्दू स्त्रियाँ प्रायः सन्तान हो जाने पर पति की ओर से सर्वथा असावधान होकर सन्तान में ही लीन रहने लगती हैं। यह भारी भूल है।

बच्चों के सामने और पीछे अब पति को 'नन्हें का बाप' या 'बुड्ढा' आदि शुष्क-शुष्क शब्दों से सम्बोधन करना

न आरम्भ कर दो। 'प्राणनाथ', 'स्वामि जी', 'आर्य-पुत्र', 'महाशय जी', 'श्रीमान् जी' इत्यादि किसी प्रेम और सम्मान सूचक शब्द से उसे बुलाओ।

मत समझो कि तुम्हारा बच्चा जितना तुम्हें प्यारा है उतना ही वह सब को प्यारा है। तुम्हारे लिए यह समझना बिलकुल स्वाभाविक है कि ऐसा अद्भुत बालक संसार में पहले कभी उत्पन्न ही नहीं हुआ। परन्तु यदि तुम सदा उसी की बातें करती रहोगी, तो दूसरे लोग तंग आ जाएंगे और परस्पर संकेत करके मुस्कराएंगे।

बच्चे का नाम सोचकर कोई सुन्दर-सा रक्खो, और अन्नप्राशन आदि सभी संस्कार करो।

याद रक्खो सन्तान के बिना घर सूना है। सन्तान हीन स्त्री-पुरुष प्रायः बहुत ही स्वार्थी और कठोर हो जाया करते हैं।

बच्चे देश के भावी नागरिक हैं। उनके नीरोग और सुशिक्षित होने से ही मातृभूमि का उद्धार होगा। उनकी देख-रेख और हितचिन्ता में जितना भी परिश्रम तुम करो, थोड़ा है। जो माता सन्तान को धार्मिक, चरित्रवान्, तन्दुरुस्त और देश-सेवक बनाती है, वह जीते-जी स्वर्ग को प्राप्त होती है।

याद रक्खो, सन्तान से माता-पिता का चरित्र सुधरता है। उन्हें त्याग, परोपकार, हृदय की कोमलता, दया

आदि गुणों की क्रियात्मक शिक्षा मिलती है ।

स्मरण रहे कि तुम्हारे अच्छे और बुरे सभी विचारों और कर्मों का बच्चों पर असर पड़ता है । वे तुम्हारी प्रत्येक चेष्टा का अनुकरण करते हैं । इसलिए यदि तुम सन्तान को उत्तम गुणों वाली बनाना चाहती हो तो संतान उत्पन्न करने के पहले अपने में सद्गुण धारण करो और अपने बुरे स्वभावों का यत्नपूर्वक परित्याग कर दो ।

सन्तान के सम्बन्ध में जब कोई बात उठे तब पति को यह मत कहने दो कि 'यह तुम्हारा काम है, तुम जानो ।' इस महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी में उसे भी तुम्हारा हाथ बंटाना चाहिए ।

आदर्श पत्नी का उत्तरार्द्ध—

आदर्श पति

दो शब्द

पिछले पन्नों में अब तक पत्नियों के लिए ही सत्परामर्श दिए गए हैं। परन्तु जब तक पति भी अच्छा न हो, जब तक वह भी अपने को आदर्श 'बनाने का यत्न न करे तब तक अकेली पत्नी का परिश्रम विशेष सफल नहीं होता। परन्तु खेद है कि बहुत से युवक अपने को पहले ही आदर्श पति समझते हैं। गृहस्थ धर्म पर कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता अपने लिए नहीं, पत्नी के लिए ही समझते हैं। पर यह उनकी भारी भूल है। पतियों के लिए हमने अगले पन्नों में बहुत-से सत्परामर्श दिये हैं। उन पर चलने से उन्हें बहुत लाभ होगा। पत्नी को चाहिए कि पति को पुस्तक का अगला भाग पढ़ने की प्रेरणा अवश्य करे। वह न पढ़े तो आप पढ़कर सुना दे।

—लेखक

आदर्श पति

१

साधारण स्वभाव

सिगरेट की राख सब कहीं फेंककर घर को मैला न करो।

अपनी चीजें घर में इधर-उधर बखेरकर घर के काम को मत बढ़ाओ।

यदि स्वभाव से तुम्हें सुथरा रहना पसन्द नहीं तो कम से कम दूसरों के विचार से ही सुथरा रहो।

जब कभी तुम्हें ज़रा-सा सिर-दर्द या जुकाम हो जाय तो भार्या को तंग न कर दिया करो। इसमें उसका दोष नहीं। उस बेचारी को तुम्हारा चिड़चिड़ापन सहते हुए तुम्हारी काफ़ी सेवा-सुश्रूषा करनी पड़ती है।

चाहे तुम्हारा काम लिखने का ही हो, झुककर मत

बैठो । तुम्हारी पत्नी तुम्हें सीधा और खुली छाती वाला देखना चाहती है ।

दबाव मत डालो । दबाव डालने के स्वभाव को कोई भी पत्नी पसन्द नहीं करती ।

बहुत अधिक गम्भीर न बने रहो । कभी-कभी घर में थोड़ी-सी हँसी-दिल्लगी भी किया करो ।

अपनी सर्वोत्तम हँसी और मखौल अपने मित्रों के लिए ही न रख छोड़ो । अपनी पत्नी को भी उनसे हँसाने का यत्न किया करो ।

केवल पुरुष की दृष्टि से ही वस्तुओं को न देखा करो । अपने को अपनी पत्नी की अवस्था में रखकर देखो कि तुम उन कई बातों को कैसा पसन्द करोगे जो उसको सहनी पड़ती हैं ।

कई पुरुषों का एक बहुत बुरा स्वभाव होता है । वे जहाँ बैठते हैं, वह चाहे चौका ही क्यों न हो, वहीं थूक देते हैं । वे बच्चों के सदृश कागज़ फाड़कर बिखेर देते हैं । ऐसे गन्दे स्वभाव से घरवाली को प्रसन्नता नहीं होती ।

अपने स्वरूप पर अभिमान मत करो । अधिक सम्भव यही है कि तुम्हारे अपने सिवा दूसरा कोई भी तुम्हारी सुन्दरता को नहीं जानता । मनुष्य में वृथा अभिमान हास्यजनक होता है ।

यदि रात को सोते समय तुम्हारी पत्नी को कोई असामान्य शब्द सुनाई दे, या वह समझे कि उसे किसी चीज़ के जलने की गन्ध आ रही है, तो उठकर उसका पता लगाने में कोई आनाकानी मत करो। यदि तुम सोये रहोगे और वह उठकर देखेगी, तो तुम्हारे लिए बड़ी लज्जा की बात होगी।

तुम चाहे घर पर ही कोई व्यवसाय करते हो, और काम करने के लिए तुम्हें बाहर नहीं जाना पड़ता, तो भी सारे दिन स्त्री के इर्द-गिर्द न लटकते फिरो। उसे किसी समय अकेली भी बैठने दो।

इसमें सन्देह नहीं कि उसका तुम पर अनुराग है, परन्तु वह किसी समय स्वतन्त्र भी होना चाहती है। यदि तुम्हें कोई काम नहीं, तो उसे घर का काम करना है।

माधवी नाम की एक प्राकृत-कवयित्री कहती है—

"जो स्त्रियों पर प्रभुता (हुकूमत) नहीं जमाते, जो गृहिणी के रंज हो जाने पर सेवक की नाईं उसे सन्तुष्ट करने का यत्न करते हैं, वे ही गृहिणियों के प्रिय बनते हैं। जो ऐसा नहीं करते वे केवल स्वामी हैं, अर्थात् प्रिय नहीं हैं।

"जिसके बिना काम नहीं चल सकता, वह यदि कभी

कोई दोष भी करे तो उस पर क्रोध न कर अनुनय ही करना पड़ता है। आग से नगर का नगर जल जाने पर भी उसे आदर के साथ पुनः घर में लाना पड़ता है।

"जो पुरुष स्त्री को कठोरता से वश में करना चाहता है वह मूर्ख है।"

२

व्यक्तिगत सम्बन्ध

स्त्री को एक खिलौना समझकर उसे घबरा मत दो। हो सकता है कि स्त्री कुछ काल के लिए खिलौना बनना पसन्द कर ले, परन्तु इससे प्रेम की नूतनता शीघ्र ही जाती रहती है।

प्रत्येक बात में अपनी ऐंठ न दिखलाओ। घर में केवल तुम्हीं बुद्धिमान् नहीं। यदि तुम अपनी धर्मपत्नी को नासमझ और जिम्मेदारी लेने के अयोग्य समझते हुए उसके साथ बालकों का-सा बर्ताव करोगे, तो इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि कुछ वर्षों के बाद तुम उसे सचमुच वैसी बना दोगे। फिर यदि मौका पड़ने पर वह कुछ सहायता न कर सके तो तुम्हें आश्चर्य, क्रोध और निराशा नहीं होनी चाहिए।

उसे रूई में लपेटकर मत रक्खो। वह मोम नहीं जो

पिघल जाएगी। वह स्त्री है। उसका सारा काम और सारा झंझट अपने कंधों पर लेने की चेष्टा मत करो। तुम उसका और अपना दोनों का काम ठीक तौर पर नहीं कर सकते।

पवन के प्रत्येक झकोरे से उसको मत बचाते रहो। इस प्रकार यदि तुमने उसके शरीर की रक्षा कर भी ली, तो उसकी आत्मा तो अवश्य मर जाएगी।

इस बात को मत भूलो कि तुम अमर नहीं हो। यदि तुम मर गये और उसे दुष्ट संसार की चालाकियों का कुछ भी ज्ञान न हुआ, तो पीछे से उसकी क्या गति होगी ?

घर आते समय कभी-कभी उसके लिए फ़लों का हार, कोई सुन्दर कपड़ा, कोई मिठाई या कोई ऐसी ही दूसरी वस्तु अवश्य लाया करो। चाहे वह वस्तु एक अधेले ही की क्यों न हो, परन्तु यह जानकर वह बहुत प्रसन्न होगी की तुम्हें उसका ध्यान रहता है।

बाहर काम पर जाते समय उसे मिलकर और 'नमस्ते' कहकर जाओ।

आगन्तुकों और पाहुनों के सामने अपनी पत्नी की निन्दा मत करो। उसके छोटे-छोटे दोषों का वर्णन करना तुम्हें कदाचित हँसी जान पड़े, परन्तु वह तुम्हें सुगमता से क्षमा न करेगी।

पत्नी को जो वचन दो उसको पूरा करने का भरसक

यत्न करो। यदि सात बजे घर पहुँच जाने का वचन दिया है तो साढ़े छः बजे किसी मित्र के साथ बाहर जाने से पूर्व दो बार सोच लो।

जब तुम देखो कि आज स्त्री वस्त्राभूषण से खूब बनी-ठनी है, तो उसके सौन्दर्य और कान्ति की प्रशंसा करने में संकोच मत करो। जब तक तुम अपना विचार उस पर प्रकट न करोगे, तुम्हारे उसको केवल अपने मन में सुन्दर समझने से उसे सुख नहीं हो सकता।

मत समझो कि तुम कोई बहुमूल्य उपहार नहीं खरीद सकते, इसलिये न देना ही अच्छा है। प्रेम से दिया हुआ तुच्छ-सा उपहार पाकर भी पत्नी प्रसन्न हो जाती है।

कोई काम बिगड़ जाए तो मुँह मत फुलाते रहो। यदि तुम अपनी खीझ को नहीं रोक सकते तो एक बार कह दो कि काम बिगाड़ दिया है, और फिर उसे मन से निकाल दो। घंटों कुढ़ते रहना ठीक नहीं।

पत्नी के साथ टट्टू का-सा बर्ताव मत करो। यदि उसे बटन लगाना याद नहीं रहा, या उससे घी गिर गया है, तो इन बातों को बार-बार मत जताते रहो।

तेवर मत चढ़ाओ और गम्भीर मत बने रहो। हँस-मुख बने रहने का स्वभाव डालो, यदि दुर्भाग्य से प्रकृति ने तुम्हें वैसा नहीं भी बनाया।

दफ्तर में, दुकान में, बाग में या पशु-शाला में जब-जब कोई काम बिगड़ जाये तब-तब स्त्री और बच्चों पर क्रोध मत निकाला करो। इस बात का अनुभव करने का यत्न करो कि उनका इससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं और उनको इसके लिये दंड देना सर्वथा अन्याय है।

अपने को स्वार्थी मत बनने दो। तुम्हारे लिये स्वार्थी बनना बहुत सुगम है, क्योंकि स्त्रियां प्रायः दब जाती हैं। आत्म-निरीक्षण करो। यदि घर में सर्वोत्तम भोजन, सर्वोत्तम स्थान तुम्हें ही मिलता है, तो इस आदर को दूर करने का यत्न करो। कुछ स्वार्थी पुरुष आप बाजार से मिठाई, फल और अन्य स्वादिष्ट पदार्थ लेकर अकेले ही खा लेते हैं। स्त्री और बच्चों के लिये कुछ भी नहीं लाते। यह परले दर्जे की नीचता और स्वार्थपरता है।

पत्नी के साथ झगड़ा मत करो। यदि तुम न लड़ोगे, तो वह नहीं लड़ सकती। जिस प्रकार गीला कीचड़ दीवार के साथ चिपक जाता है, वैसे ही क्रोध में कहे हुए शब्द मन में चिपके रहते हैं।

अपनी भार्या के निवेदनों को सुनने से इन्कार मत करो। याद रक्खो इनको करने के लिये उसे विशेष यत्न करना पड़ता है। यदि तुम पाषाण-हृदय नहीं तो उनको सुनकर उसे व्याकुलता से बचा सकते हो।

अपनी पत्नी के साथ किसी बात में भी कभी झूठ मत बोलो। तुम दोनों के बीच पूर्ण विश्वास होना चाहिये। यदि उसे एक बार भी तुम्हारा झूठ मालूम हो गया, तो तुम्हारे सत्य बोलने पर भी वह तुम्हारा विश्वास न करेगी।

'तुम्हें बात करने की अक्ल नहीं' 'तुम इसको नहीं समझ सकतीं', ऐसे अनुचित शब्द कहकर भार्या को मत झिड़क दो। उसमें भी उतनी ही बुद्धि है जितनी कि तुम्हारे दफ्तर के सहकारी और मित्र में है, उस बेचारी को केवल अवसर नहीं मिलता। जिन विषयों पर आप अपने पुरुष-मित्रों से वार्तालाप करते हैं, उनमें से किसी एक पर पत्नी के साथ बातचीत कीजिये। हाँ, आवश्यकता होने पर साथ-साथ समझाते भी जाइये। आपको उसकी बुद्धि का विकास देखकर आश्चर्य होगा। वह प्रत्येक बात में दिलचस्पी लेने लगेगी।

मत समझो कि अब पत्नी के प्रति प्रेम का प्रकाश करने की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि उसे अपने आप मालूम होना चाहिये कि तुम उस पर प्रेम करते हो। स्त्री दादी बन जाने पर भी पति द्वारा आलिंगन, चुम्बन आदि प्रेमद्योतक क्रीड़ाओं का किया जाना पसन्द करती है।

यदि तुमने धन के लालच से विवाह किया है, तो

सुख की आशा मत रक्खो। एक बार स्त्री को इस बात का पता लग जाने पर फिर वह तुम्हें कभी भूलने न देगी।

यदि तुमने केवल इस विचार से विवाह किया है कि तुम्हें एक अवैतनिक दासी मिल जायगी तो मत समझो कि वह स्थिति तुम्हारी पत्नी को सन्तुष्ट कर सकेगी। यदि उसे दासी ही बनना था तो वह किसी दूसरे स्थान में नौकरी करके धनोपार्जन कर सकती थी। विवाह का उद्देश्य कुछ और ही है।

मत समझो कि क्योंकि तुम और तुम्हारी स्त्री में पूर्ण प्रेम है इसलिये तुम्हारे आकाश में कभी मनोमालिन्य का बादल आएगा ही नहीं। तुममें से कोई भी पूर्ण नहीं है, और तुम्हें अभी सीखना है कि तुम किन उपायों से आपस के कलह से बच सकते हो।

जब कोई काम बिगड़ जाए तो यह आशा मत करो कि उत्साह बढ़ाने का सारा काम तुम्हारी स्त्री ही करे और तुम शोक के समुद्र में ही डूबते जाओ। दोनों एक समान भाग लो।

पत्नी के किसी शारीरिक दोष की चर्चा मत करो। मन का सौंदर्य शरीर के सौंदर्य से कहीं अधिक महत्त्व रखता है।

अपनी पत्नी के साधारण गुणों को इसलिये घृणा की दृष्टि से मत देखो कि वह वैसी नहीं जिसे लोग भुवन-मोहिनी कहें। गृहस्थी को चलाने में शुद्ध व्यवहार-ज्ञान भड़कीलेपन की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान् होता है।

अपनी भार्या को डरपोक मत कहो क्योंकि वह छिपकली से डरती है। अधिक सम्भव यह है कि वास्तविक भय की अवस्था में वह तुमसे भी अधिक वीरा सिद्ध होगी।

नवविवाहिता पत्नी की बालोचित रीतियों से मत चिढ़ो। वे शीघ्र ही छूट जायँगी।

घर में 'नवाब साहब' बनकर मत रहो। इससे तुम्हारा दबदबा बढ़ने के स्थान में तुम हास्यजनक बन जाओगे।

मत समझो कि क्योंकि तुम्हारी भार्या एक स्त्री है इसलिये वह सर्वगुणसम्पन्न देवी होनी चाहिए। वह भी तुम्हारे सदृश ही एक मानवी है और तुम से अधिक पूर्ण नहीं।

अपनी पत्नी को अपने व्यापार-सम्बन्धी कामों से अनभिज्ञ मत रक्खो। यह समझना मूर्खता है कि क्योंकि वह व्यापार के विषय में कुछ नहीं जानती, इसलिये उसे रस नहीं आ सकता। तुम बहुधा देखोगे कि उसकी नारी-

बुद्धि छोटी-छोटी कठिनाइयों में से निकलने के लिये कोई ऐसी विधि निकालेगी जो तुम्हें कभी नहीं सूझी ।

कितने ही पति पहले तो अपनी पत्नी को एक सर्वाङ्गपूर्ण स्वर्गीय देवी समझकर उसका पूजन करने लगते हैं, परन्तु जब उन्हें पता लगता है कि वह भी साधारण मानवों के सदृश पूर्ण नहीं, तो उन्हें भारी दुःख होता है और वे अपना शेष जीवन उसकी अधोगति पर शोक करने में ही व्यतीत करते हैं । सम्भवतः वह अब भी वही है जो पहले सदा थी, केवल वे उसे अब दूसरे कांच में से देख रहे हैं ।

'स्त्री की बुद्धि जूड़े के पीछे होती है, उसकी बात पर ध्यान नहीं देना चाहिए, उसे बच्चों के सदृश किसी प्रकार टाल देना ही उचित है', ऐसा भाव रखना बहुत बुरा है । इसमें संदेह नहीं कि तुम बड़े चतुर मनुष्य हो और तुम्हारी बातों को ध्यानपूर्वक सुनने से उसे बड़ी शिक्षा मिल सकती है, परन्तु हो सकता है कि उसके पास भी वर्णन करने योग्य विचार हों ।

अपनी पत्नी के मन की कार्यशैली को सविस्तार समझने की आशा मत रक्खो ।

स्त्री भिन्न रूपों से परिणामों पर पहुँचती है । तुम्हारा ऐसा मत क्यों है ? या तुम वैसे विचार क्यों रखती

हो ? ऐसे प्रश्नों से उसे व्याकुल करना व्यर्थ है।

बुरे समाचार को स्त्री से छिपाने का यत्न मत करो। वह ताड़ जाएगी कि कोई अमंगल हुआ है और तुम्हारे उसको सीधे तौर पर बता देने की अपेक्षा अब उसे बहुत अधिक उद्वेग होगा।

जब तुम्हारी पत्नी कहीं बाहर जाने को हो तो उसे कुछ दूर, कम से कम रेलवे-स्टेशन तक छोड़ने जाओ, और जब वह बाहर से आ रही हो तो उसकी अगवानी के लिये जाओ। वह अपने आप आ-जा सकती है, उसको मेरी सहायता का प्रयोजन नहीं, ऐसा भाव रखकर उसकी उपेक्षा मत करो। चाहे तुम्हारी सहायता का उसे प्रयोजन न भी हो, तो भी तुम्हारे इस कर्म से उसका मान और प्रीति बढ़ेगी।

घर में चुप बैठे रहने का स्वभाव मत बनाओ। हमारा अभिप्राय यह नहीं कि आपको सभ्यतापूर्वक बात-चीत करने के लिये विशेष यत्न करना पड़ता है, परन्तु अनेक पति अपनी पत्नियों को इस योग्य ही नहीं समझते कि उनके साथ वार्तालाप किया जाए। इसके विपरीत यदि उनका कोई मित्र आ जाए तो वे चटपट उल्लासपूर्ण बात-चीत आरम्भ कर देते हैं।

पत्नी से यह आशा मत करो कि वह सदा तुम्हारी

ही सेवा-शुश्रूषा और आवभगत में लगी रहे। उसे और भी आवश्यक कार्य हैं। यदि तुम उसे तंग न कर दोगे तो युक्तियुक्त सीमा तक तुम्हारी सेवा करके उसे प्रसन्नता प्राप्त होगी।

मत समझो कि घर में लड़ते-भिड़ते हुए भी तुम दोनों सुख से जीवन व्यतीत कर सकते हो। गृहस्थाश्रम एक गाड़ी के सदृश है जिसका एक पहिया यदि आगे को और दूसरा पीछे को चलेगा तो वह कदापि आगे न बढ़ सकेगी।

विवाद को चरम सीमा तक बढ़ाने का हठ मत करो। तर्क-वितर्क को कब बन्द कर देना चाहिए, यदि तुम यह जानते हो तो तुम बुद्धिमान् हो।

जहां तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का मतभेद हो वहां उसकी बात को मान लेने में अपना अपमान मत समझो। यदि यह कोई सिद्धान्त की बात हो, तो युक्ति से उसे दिखला दो कि तुम ऐसा क्यों समझती हो, और वह तुम्हारी युक्तियों का सम्मान करेगी, परन्तु तुम्हें भी समान रूप से उसकी युक्तियों को सुनना और उसका सम्मान करना चाहिए।

मत यत्न करो कि पत्नी अपना छोटे-से-छोटा काम भी तुम्हारे ही अनुशासन के अनुसार करे। पत्नी भी

एक व्यक्ति है और उसे भी कुछ स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

मत आशा करो कि प्रत्येक विषय में पत्नी तुम्हारी हां में हां मिलाये। यह सच है कि कुछ पुरुष अपनी प्रतिध्वनि सुनना पसन्द करते हैं, परन्तु कालान्तर में यह बात बड़ी कष्टदायक हो जाती है।

अपनी पत्नी के साथ राजनीति और ब्रह्मज्ञान की चर्चा करने में संकोच मत करो। अनेक पुरुष यही मानकर सन्तुष्ट रहते हैं कि 'स्त्रियां राजनीति और ब्रह्मज्ञान को नहीं समझ सकतीं।' वे क्यों नहीं समझ सकतीं? क्योंकि उनको इन विषयों का यथार्थ ज्ञान रखने वाले पुरुषों के साथ वार्तालाप करके अपने विचारों को परिमार्जित करने का कभी अवसर नहीं मिलता। अपनी पत्नी को राजनैतिक विषयों का अध्ययन और उन पर वार्तालाप करने के लिए उत्साहित करो। कुछ परवाह नहीं यदि वस्तुओं को देखने के लिए उसका दृष्टिकोण तुमसे भिन्न है। उसे अपना मत बनाने और उनका प्रकाश करने दो।

जो शिष्टाचार तुम दूसरी स्त्रियों के प्रति दिखलाते हो, अपनी स्त्री को उससे वंचित मत रक्खो। उदाहरणार्थ, यदि कोई बोझ हो तो स्त्री के सिर पर देने के स्थान में आप उठाकर लाओ। उसके सामने अश्लील वार्तालाप से

परहेज़ करो।

अपनी भार्या को केवल अपने बच्चों की माँ ही समझने का स्वभाव न पड़ने दो। माता बन जाने से यह आवश्यक नहीं कि वह तुम्हारी संगिनी न रहे। परन्तु यदि वह देखेगी कि तुम उसकी परवाह नहीं करते तो वह धीरे-धीरे सन्तान में ही लीन रहने लगेगी।

उसे अब हर समय 'नन्हे की मां' या 'नत्थू की भाभी' कहकर पुकारना मत आरम्भ कर दो। विवाह के पहले वर्षों में 'प्राणवल्लभा', 'प्राणप्रिया', 'प्राणेश्वरी', 'श्रीमती' आदि जिन प्रीति-द्योतक नामों से तुम उसे बुलाया करते थे, अब उनका परित्याग मत कर दो। उसे माता होने का अभिमान है परन्तु वह साथ ही पत्नी भी बनी रहना चाहती है।

पत्नी को 'हांकने' का यत्न मत करो। उसे मार्ग दिखाना अधिक सुगम जान पड़ेगा।

पत्नी के ज़रा-सी हँसी करने पर चिढ़ मत जाओ। इसमें कटुता की बात कुछ भी नहीं। न मालूम उस बेचारी को तुमसे ऐसी कितनी बातें सहनी पड़ती हैं।

अपनी पत्नी का यथोचित सम्मान करने में कभी मत चूको। 'स्त्री पाँव की जूती है, वह ताड़ना किये बिना कुछ नहीं समझ सकती,' ऐसे वाहियात विचार को मन में

कभी मत घुसने दो। कई विषय ऐसे भी हैं जिनका उसको तुमसे कहीं अधिक ज्ञान है, और कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें उससे घृणा की जा सकती है।

अपने विवाहित जीवन का आरम्भ बहुत अधिक आशाओं के साथ मत करो। यदि तुम कम की आशा करोगे तो तुम बहुत-सी निराशा से बच जाओगे।

'पत्नी को कभी-कभी खरी-खरी सुनाते रहना अच्छा है', ऐसा मत कहो। इसका अर्थ केवल यह है, कि तुम दुःखी बनना चाहते हो।

अपनी भार्या का सर्वोत्तम मित्र और साथ ही पति होना मत भूलो। सच्ची मित्रता सब प्रकार की घबराहटों को दूर कर देती है।

उदारता के प्रत्येक कार्य के लिये 'बदला' मत चाहो। बदला चाहने से उदारता का भाव नष्ट हो जाता है।

सबके सामने स्त्री को मत डांटो। यदि आवश्यकता हो तो एकान्त में उसे समझा दो। सबके सामने डांटने का परिणाम अच्छा न होगा।

प्रशंसा के कंजूस मत बनो। जब उसने नये फैशन की पोशाक पहनी हो, या केशपाश को नये ढँग से संवारा हो या कोई बढ़िया प्रकार का स्वादिष्ट भोजन बनाया हो, तो उसकी प्रशंसा में कृपणता मत करो। इससे तुम्हारी

पत्नी को केवल प्रसन्नता ही न होगी, वरन् तुम्हारा अपना हँसमुखपन भी दृढ़ होता जायगा। और हँसमुख होना एक ऐसा गुण है जिसे बढ़ाने की बड़ी आवश्यकता है।

इस बात को मत भूलो कि शब्दों की अपेक्षा कर्म अधिक उच्च स्वर से बोलते हैं। यदि तुम वही बातें करते हो जिनसे तुम जानते हो कि तुम्हारी पत्नी अप्रसन्न होती है, तो उसे तुम्हारा यह कहना कि मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ, सर्वथा निरर्थक है।

पत्नी की झूठी प्रशंसा मत करो। यदि वह बहुत ही अभिमानी स्त्री नहीं तो वह निश्चय ही तुम्हारी झूठी प्रशंसा को समझ जायगी। इससे प्रसन्न होने की अपेक्षा उसे अधिक दु:ख होगा। जहां तुम कर सको वहां प्रशंसा करो, परन्तु झूठी खुशामद को एक ओर रख दो।

जब कभी तुम्हारा मतभेद हो तो सदा अपनी भार्या ही को ग़लती पर न समझो। तुम भी कोई निर्भ्रान्त नहीं, हो सकता है तुम्हारी बात ही ग़लत है।

भार्या के निमित्तों का निर्णय न करो। वह कोई बात किसी ऐसे निमित्त से कर सकती है जो तुमको कभी सूझ ही नहीं सकता और उसका वह काम पूर्णतया न्यायसंगत हो सकता है।

चाहे दूसरों के साथ संकोच करने का तुम्हारा स्वभाव हो, परन्तु पत्नी के साथ संकोची मत बनो। उसके साथ बिल्कुल साफ रहो और अपने सारे व्यवहारों में उस पर भरोसा करो। यदि उसे किसी ऐसी बात को स्वयमेव यत्नपूर्वक मालूम करना पड़ा जिसके विषय में वह तुमसे आशा रखती थी कि तुम आप ही उसे बता दोगे, तो उसे बड़ा दु:ख होगा।

महत्वाकांक्षा प्रेम को न दबाने पाए। तुम्हारे जीवन में दोनों के लिये स्थान होना चाहिये, परन्तु कुछ पुरुष अपने व्यापार या महत्वाकांक्षा में इतने लीन रहते हैं कि उनके पास पत्नियों के साथ प्रेम करने के लिये समय ही नहीं रहता।

जब तुम एक दूसरे से अनुपस्थित हो तो पत्नी को प्रतिदिन पत्र लिखना मत भूलो। चाहे तुम पत्र में दो ही पंक्तियां लिखो परन्तु इससे उस पर प्रकट हो जाएगा कि तुम्हें उसका ध्यान रहता है।

मत समझो कि तुम हृदय के घावों को बहुमूल्य उपहार देकर भर सकते हो। एक पुरुष जब-जब अपनी स्त्री से बुरा व्यवहार करता, तब-तब ही उसको शांत करने के लिये एक अंगूठी या झुमका खरीदकर देता था, परन्तु इससे स्त्री के हृदय का घाव नहीं भरता था। दूसरी ओर,

पति के सच्चे प्रेम के प्रकाश के सामने, यदि वह कुवचनों द्वारा उसके हृदय को ठेस न लगाये, पत्नी अपने सारे आभूषण प्रसन्नतापूर्वक दे देने को तैयार थी।

यदि तुम्हारी स्त्री सनातनधर्मावलम्बिनी है और तुम आर्यसमाजी हो, तो उसके देवी-देवताओं की हँसी करके उसे मत दुखाओ, वरन् उसे प्रेम तथा युक्ति से समझाकर अपने पक्ष में लाने का यत्न करो। व्यर्थ का झगड़ा करना ठीक नहीं। परन्तु—

घर में वाद-विवाद को मत दबाओ। परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपने विचार प्रकट करने दो। इससे उस प्रकार की सड़ाँद बिलकुल न होने पायेगी, जो प्रायः ऐसे घरों में देखी जाती है जहां किसी प्रकार के विषय पर वाद-विवाद करने की आज्ञा नहीं।

यदि पत्नी से कोई छोटी-सी भूल हो जाय तो उसकी हँसी न करने लग जाओ। अधिक सम्भव है कि इससे उसके हृदय को बहुत ठेस पहुँचेगी और वह तुम्हारे पास बैठकर बातचीत करना छोड़ देगी।

स्मरण रहे कि विवाहित जीवन में छोटी-छोटी बातों से बड़ी-बड़ी खराबियां पैदा हो जाया करती हैं। डाहों, तुच्छ स्वार्थपरताओं, क्षुद्र खिजलाहटों, छोटे-छोटे क्रोधों और छोटी-छोटी बोली-ठिठोलियों से परहेज करो। यदि

तुम स्त्री को प्रसन्न करने वाली कोई बात मुँह से नहीं निकाल सकते, तो चुप रहना सीखो।

'क्या करूँ इस धन को ? इससे तो मैं किसी फकीर के पल्ले पड़ी रहती तो अच्छा था, जो मांगकर लाता, मेरे पल्ले में डालता और रात को बैठकर दु:ख-सुख की दो बातें करता। मैं प्रेम की भूखी हूँ, धन की नहीं,'—ये एक ऐसी युवती के हृदय से निकले हुए शब्द हैं, जिसका विवाह यद्यपि एक धनाढ्य घराने में हुआ था परन्तु जिसका पति उसे बुलाता तक नहीं था।

गहने-कपड़े से, आच्छादन से, प्रेम-प्रीति से, मान-सम्मान से जैसे भी हो, स्त्री को प्रसन्न रखना तुम्हारा परम कर्तव्य है। मनु महाराज के निम्नलिखित अमूल्य उपदेशों को सदा याद रक्खो :—

"अधिक कल्याण के चाहने वाले पिता, भ्राता, पति और देवर आदि को उचित है कि वे स्त्रियों का आभूषण तथा वस्त्रादि से सदा सत्कार किया करें। क्योंकि जहाँ स्त्रियों का सदा सत्कार होता है वहाँ देवता रमण करते हैं, और जहां इनकी पूजा नहीं होती वहां सब शुभ कर्म व्यर्थ हो जाते हैं।

"जिस कुल में स्त्रियां शोक से आकुल रहती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और जिस कुल में स्त्रियां

शोक नहीं करतीं वह कुल निश्चय ही सदा बढ़ता है।

"स्त्रियां तिरस्कृत हुईं, दुःखी होकर जिन घरों को शाप देती हैं, वे घर यत्नपूर्वक की हुई क्रियाओं से हत हुए की भांति सब प्रकार से नष्ट हो जाते हैं।

"इसलिए ऐश्वर्य की इच्छा वाले मनुष्यों को उचित है कि नित्यप्रति इष्ट-मित्रादि के सत्कार तथा उत्सव-काल में स्त्रियों को भोजन, वस्त्र तथा आभूषण से सदा प्रसन्न रक्खें।

"जिस कुल में स्त्री से पति और इसी प्रकार पति से पत्नी प्रसन्न रहती है, उस कुल में निश्चय करके सदा स्थिर सुख रहता है।

"निश्चय करके जो स्त्री वस्त्राभूषणादि से रोचक (शोभायमान) नहीं वह पुरुष को प्रसन्न नहीं कर सकती, और पुरुष की अप्रसन्नता से सन्तान उत्पन्न नहीं होती। अर्थात् स्त्री और पुरुष दोनों की प्रसन्नता से उत्तम सन्तान उत्पन्न होती है, अन्यथा नहीं।

"और स्त्री के प्रसन्न रहने पर सारा कुल प्रसन्न रहता और स्त्री के अप्रसन्न रहने से सारा कुल अप्रसन्न रहता है। इसलिए यत्नपूर्वक स्त्री को सदा प्रसन्न रखना चाहिए ताकि सम्पूर्ण कुल प्रसन्न रहे।

"जिस कुल में भर्त्ता और भार्या परस्पर प्रसन्न रहते

हैं, उस कुल में धर्म, अर्थ, तथा काम इन तीनों का निश्चय ही मेल होता है, अर्थात् ये तीनों ही वास करते हैं।"

विवाह के समय तुमने अग्निरूप परमेश्वर तथा उपस्थित विद्वानों को साक्षी करके जो प्रतिज्ञायें की थीं, उनको मत भूलो। उनको स्मरण रखने से तुम्हारे छोटे-मोटे मनमुटाव अपने आप दूर हो जायेंगे। उन प्रतिज्ञाओं और प्रार्थनाओं में से कुछ एक ये हैं—

"हे इस यज्ञशाला में बैठे हुए विद्वान् लोगो! आप निश्चय करके जानें कि हम अपने गृहस्थाश्रम में प्रसन्नता-पूर्वक एकत्र रहने के लिए एक दूसरे को स्वीकार करते हैं। हमारे हृदय जल के समान शान्त और मिले हुए रहेंगे। जैसे प्राण-वायु हम को प्रिय है, वैसे ही हम दोनों एक दूसरे से प्रसन्न रहेंगे। जैसे धारण करनेहारा परमेश्वर सब जगत् को धारण करता है, वैसे ही हम दोनों एक दूसरे को धारण करेंगे। जैसे उपदेश करने वाला श्रोताओं से प्रीति करता है, वैसे ही हम दोनों की आत्मा इस दृढ़ प्रेम को धारण करे!

"हे वरानने! जैसे पवित्र वायु या जैसे तेजोमय जल आदि को किरणों से ग्रहण करनेहारा सूर्य दूरस्थ पदार्थों और दिशाओं को प्राप्त होता है, वैसे ही तू अपनी इच्छा से मुझको प्राप्त होती है। तुझको वह परमेश्वर मेरे मन

के अनुकूल करे !

"हे प्रिये ! ऐश्वर्ययुक्त मैं तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। तू धर्म से मेरी पत्नी है। और धर्म से मैं तेरा गृहपति हूँ। हम दोनों मिलकर घर के कामों की सिद्धि करें और जो दोनों का अप्रियाचरण कर्म है उसको कभी भी न करें, ताकि घर के सब काम सिद्ध हों, सन्तान उत्तम हो और ऐश्वर्य तथा सुख की बढ़ती सदा होती रहे।

"हे अनघे ! सब जगत् के पालन-कर्त्ता परमेश्वर ने तुझको मुझे दिया है। तू मेरी पोषण करने योग्य पत्नी हो। तू मुझ पति के साथ सौ शरद ऋतु तक सुखपूर्वक जीवन धारण कर।

"हे भद्रवीर ! जैसे आप मेरे सिवा किसी दूसरी स्त्री से प्रीति न करेंगे वैसे मैं भी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रीतिभाव से न वर्त्ता करूँगी।

"हे कल्याण-क्रीड़े ! मैं मन से भी तेरे साथ कभी चोरी नहीं करूँगा और न ही किसी उत्तम पदार्थ का चोरी से भोग करूँगा।

"हे वधु ! सम्पूर्ण प्रेम से तुझको ग्रहण करता हूँ··· साथ मिलकर वीर्य को धारण करें, उत्तम प्रजा को उत्पन्न करें, और सौ वर्ष तक जीने वाले बहुत से पुत्रों को उत्पन्न करें।

"हे पत्नी ! जो यह तेरा हृदय है, वह मेरे हृदय के तुल्य प्रिय हो, और मेरा जो यह आत्मा, प्राण और मन है, सो तेरे आत्मादि के लिए सदा प्रिय रहे ।"

कुछ पुरुष विवाह होने पर पहले तो स्त्री के गुलाम से बन जाते हैं। उसके रूप और यौवन रूपी चन्द्रमा का वे अपने को चकोर समझते हैं। वे चाहते हैं कि स्त्री सारा दिन उनके सामने बैठी रहे और वे उसे देखा करें। वे कामान्ध-से रहते हैं। उसे खूब शौकीनी कराते हैं। अपनी सामर्थ्य से बाहर होकर उसके लिए भोग-विलास की सामग्री जुटाते हैं। वे उसे घर का कोई काम नहीं करने देते, क्योंकि रोटी बनाने और बर्तन मलने से उनकी प्राणेश्वरी को कष्ट होता है। वे उसकी खाट आप बिछाते और जूठे बर्तन आप साफ़ करते हैं। यह स्पष्ट है कि ऐसी कामान्धता सदा नहीं रह सकती। कुछ ही देर बाद खर्च से कचूमर निकलने लगता है। नौकर रखने की सामर्थ्य नहीं होती। उधर श्रीमती जी इतने दिन लाड़-प्यार, और हार-शृङ्गार में जीवन व्यतीत करने के कारण घर का मोटा काम करने को अपना अपमान समझने लगती हैं। बस, घर में खटपट का सूत्रपात होता है। पति महाशय कन्या-विद्यालयों को कोसने लगते हैं कि वे लड़कियों को अच्छी शिक्षा नहीं देते। वे अपनी भूल को

नहीं देख सकते। ऐसे अदूरदर्शी पतियों का जीवन कई बार दुःखमय हो जाता है। इसलिए बुद्धिमान् पति को चाहिए कि आरम्भ से ही इस प्रकार बर्ताव करे कि पीछे से उसे पछताना न पड़े। पत्नी को तुम जिस प्रकार पहले से स्वभाव डालोगे वह वैसी ही बन जायेगी।

विवाह के बाद अपने कर्तव्य-ज्ञान को मत खो बैठो। न तो पत्नी तुम्हारी नाक में नुकेल डाल ले और न तुम ही माता की गोदी में छिपे रहो। माँ-बाप ने तुमको पाल-पोसकर बड़ा बनाया है। उनकी सेवा करना तुम्हारा कर्तव्य है। स्त्री को तुमने अपनी धर्मपत्नी और गृह-स्वामिनी बनाया है। वह माता-पिता को छोड़कर तुम्हारे पास आई है। उसको प्रसन्न रखना तुम्हारा धर्म है। इसलिए माता-पिता की पूजा और सेवा में किसी प्रकार की त्रुटि न दिखलाते हुए पत्नी को उसके अधिकारों से वंचित करके उसके तथा अपने जीवन को दुःखमय मत बनाओ। तुम पर माता-पिता तथा पत्नी का जितना अधिकार है, वह उन दोनों को समझा दो ताकि वे तुमसे अधिक की आशा ही न रक्खें। इस प्रकार तुम अनेक गृहस्थ-सम्बन्धी झंझटों और क्लेशों से बचे रहोगे। संकोच करोगे तो दुख पाओगे। यह अनुभव-सिद्ध बात है।

किसी सदाचारी एकपत्नी-व्रती रण्डवे की करुणा-

जनक दशा को देखकर पत्नी से प्रेम करना सीखो। परमात्मा न करे यदि तुम्हें पत्नी-वियोग का दुःख सहना पड़े तो तुम्हारी क्या दशा होगी, इसका अनुमान करो। पत्नी के न रहने पर पुरुष को कैसा दुःख और सन्ताप होता है, सुनिये—

पत्नी-वियोग

ठीक सांझ का समय हुआ है,
पशु-पक्षी आवें उड़ि भौन।
प्रिय पत्नी, सुत सन्तति, से मिल,
सुख पाते हो जाते मौन॥
वैसे ही मानवगण भी,
निज प्रिय पत्नी, सुत, पितु, परिवार।
मिलते-जुलते मुदमय होते,
सुखयुत सोते पांव पसार॥
ऐसे सुख की बेला में हा!
मुझे अकेले छोड़,
कहाँ गई तू प्रिये!
आज इस भाग्यहीन जन से मुख मोड़?
इस भीषण-भव-अग्नि-ज्वाला से,
जलते हुए प्राण मेरे।
किसके द्वारा हो सकते हैं,
शीतल प्रिये! बिना तेरे!
मेरे जीवन-मरुस्थली में,
तू थी स्निग्ध सलिल का स्रोत।

इस भवसागर के तरने में,
तेरा मन था मुझको पोत !
तेरे बिना हुआ हा प्यारी !
सूना मुझको यह संसार।
कानन-सदृश भयंकर भीषण.
ज्ञात हो रहा है घर-द्वार ॥
जिधर देखता उधर दीखते,
सुख से करते लोग विहार,
इस विशाल भव में दुखिया,
मैं ही केवल, हा कष्ट अपार !
मरना तो जीवन की गति है,
उसके लिए वृथा है शोक।
यह कह मुझको समझाते हैं,
सब जन मेरी दशा विलोक ॥

—त्रिवेदी मालिकराम

फिर सुनिये—

आंसू

हाय ! मेरा जीवन,
प्रेम औ' आंसू के कन।
आह मेरा अक्षय-धन,
अपरिमित-सुन्दरता औ' मन :
एक वीणा की मृदु-झंकार,
कहां है सुन्दरता का पार।
तुम्हें किस दर्पण में सुकुमारि !
दिखाऊं मैं साकार ?

तुम्हारे छूने में था प्राण,
सङ्ग में पावन गंगा स्नान।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि,
त्रिवेणी की लहरों का गान!
अपरिचित-चितवन में था प्रात,
सुधामय-सांसों में उपकार,
तुम्हारी छाया में उपचार,
तुम्हारी छाया में आधार,
सुखद चेष्टाओं में आभार!
करुण भौंहों में था आकाश,
हास में शैशव का संसार,
तुम्हारी आंखों में कर वास,
प्रेम ने पाया था आकार!
कपोलों में उर के मृदु-भाव,
श्रवण नयनों में प्रिय-बर्ताव,
सरल संकेतों में संकोच,
मृदुल-अधरों में मधुर दुराव!
ऊषा का था उर में आवास
मुकुल का मुख में मृदुल-विकास।
चांदनी का स्वभाव में भास,
विचारों में बच्चों के सांस!
बिन्दु में थी तुम सिन्धु अनन्त,
एक सुर में समस्त संगीत।

एक कलिका में अखिल वसन्त,
धरा में थीं तुम स्वर्ग-पुनीत !
भले ही दुःख से मेरा मन,
हो गया है दर्पण-सा चूर,
सुमुखि ! टुकड़े-टुकड़े में आज,
तुम्हारी ही छवि है भरपूर।
विधुर-उर के मृदु-भावों से,
तुम्हारा कर नित नव शृङ्गार,
पूजता हूं मैं तुम्हें कुमारि !
मूंद दुहरे-दृग-द्वार।
अचल पलकों में सुछवि उतार,
पान करता हूं रूप अपार
पिघल पड़ते हैं प्राण,
उबल चलती है दृग-जल-धार ?
बालकों ही-सा तो मैं हाय!
याद कर रोता हूं अनजान,
न जाने होकर भी असहाय,
पुनः किससे करता हूं मान।
सुप्ति हो स्वल्प-वियोग
नव-मिलन को अनिमेष,
देव ! जीवन भर का विश्लेष
मृत्यु ही है निःशेष।
मूंद पलकों में प्रिया के ध्यान को
थाम ले अब हृदय ! इस आह्वान को,

त्रिभुवन की भी तो श्री भर सकती नहीं;
प्रेयसी के शून्य पावन स्थान को !!
तेरे उज्ज्वल-आंसू-सुमनों से सदा
वास करेंगे—भग्न हृदय उनकी व्यथा
अनिल पोंछेगी, करुण उनकी कथा
मधुप-बालिकायें गाएंगी सर्वदा !

—श्री सुमित्रानन्दन पन्त

३

डाह

मुसलमान नवाबों के सदृश पत्नी को परदे में बन्द रखने का यत्न मत करो। यह उसके सती-धर्म का अपमान है और उसके प्रति तुम्हारे अविश्वास को प्रकट करता है। घर की चहार-दीवारी में बन्द रहने या बुर्का पहनकर निकलने मात्र से कोई स्त्री सती नहीं रह सकती। अपने पतिव्रत-धर्म के विचार ही उसे पवित्र रख सकते हैं। जिस देवी का मन पवित्र है उसे खुले मुँह फिरने में कुछ भी हानि नहीं। अपवित्र मन वाली स्त्री को लोहे का पिंजरा भी अपवित्रता से नहीं रोक सकता। लोकोक्ति है—'स्त्री रहे तो अपने आप से, नहीं जाए सगे बाप से।' इसलिये परदे में बन्द करके उसके स्वास्थ्य को बिगाड़ने के स्थान में उसके चरित्र को उत्तम विचारों द्वारा उच्च

और दृढ़ बनाने का यत्न करो। इसीसे उसकी रक्षा होगी।

यदि तुम किसी रूपवती युवती को देखो तो उसका बार-बार उल्लेख करके अपनी पत्नी को मत खिझाओ। आरम्भ में कदाचित् वह डाह न करे, परन्तु हो सकता है कि कुछ काल उपरान्त वह समझने लगे कि दाल में कुछ काला है।

प्रतिदिन व्यायाम, संध्या-स्नान, प्राणायाम आदि द्वारा अपने शरीर और मन को स्वच्छ और निर्दोष बनाने का यत्न करो। कभी-कभी उबटन और सुगंधित तैलों का भी प्रयोग करना चाहिए। तुम्हें स्वच्छ और सुन्दर देखकर तुम्हारी पत्नी प्रसन्न होगी।

काम-शास्त्र में लिखा है कि पति के मैला रहने, बूढ़ा होने, कुबड़ा होने, कृपण होने, अकारण सन्देह करने, परस्त्रीगामी होने, दरिद्र होने, और काम-कला को न जानने से प्राय: स्त्री उससे विरक्त हो जाती है। इसलिये इन दोषों को दूर करने का यत्न करो।

स्त्रियां प्राय: मुख से कुछ न बोलकर अपनी विशेष चेष्टाओं द्वारा अपने भावों को प्रकट करती हैं। उनकी इस मौन भाषा को न समझने से गृहस्थी का सुख नष्ट हो जाता है। इसलिए स्त्रियों के हाव-भाव और चेष्टाओं को समझकर उनके अनुकूल बर्ताव करना चाहिए।

नारी-प्रकृति को समझने के लिए मुनियों ने काम-शास्त्र का अध्ययन आवश्यक बतलाया है। काम-सूत्र, रति रहस्य, और नागर-सर्वस्व आदि प्राचीन काम-शास्त्रों और डाक्टर मेरी स्टोप्स, हेवेलाक एलिस तथा फ्राइड आदि पाश्चात्य विद्वानों की इस विषय की पुस्तकें नव-युवक पतियों को अवश्य पढ़नी चाहिएँ। बाजार में जो आजकल कोकशास्त्र के नाम से पुस्तकें मिलती हैं, उनमें प्राचीन काम-शास्त्र की एक भी उपयोगी बात नहीं दी गई। केवल कपोल-कल्पित चित्रों के नाम पर ही पैसे बटोरे जाते हैं।

अपनी पत्नी को निर्दोष भाव से किसी पुरुष के साथ हँसती देखकर उसके अपवित्र होने का सन्देह न कर लो। यदि वह पुरुष तुम्हारी सम्मति में अच्छा नहीं, तो स्त्री को एकान्त में समझा दो। काम-शास्त्र के अध्ययन से आप अपनी स्त्री को दुष्ट लोगों के हथकंडों से सुरक्षित रख सकने में भली भांति समर्थ हो सकते हैं।

यदि आप अपनी पत्नी के साथ प्रेमालाप के लिए कुछ भी समय न निकालेंगे, और धन कमाने में लगे हुए रोटी भी दुकान पर ही मँगायेंगे, और सूर्योदय के पहले के निकले हुए रात के दस बजे केवल सोने के लिए घर पहुँचेंगे तो आपकी स्त्री के सतीत्व का परमेश्वर ही रक्षक है। याद रक्खो स्त्रियों के आचार-भ्रष्ट हो जाने से कुल

कलङ्कित होकर नष्ट हो जाते हैं। स्त्री की आत्मा प्रेम की प्यासी है। धन उसके शरीर को तृप्त कर सकता है, आत्मा की प्यास नहीं बुझा सकता। धन कमाना ही जीवन का उद्देश्य न बनाओ। जीवन का आनन्द लेना भी सीखो।

यदि तुम्हारी स्त्री सुशिक्षित नहीं तो सन्तान उत्पन्न करना शुरू करने से पहले उसे पढ़ा लो। इसका एकमात्र उपाय यही है कि जब तक वह लिख-पढ़ न जाए, पूर्ण ब्रह्मचर्य रखो, और उसे जतला दो कि जब तक तुम लिखना-पढ़ना न सीख लोगी मैं तुम्हारे साथ दाम्पत्य-सम्बन्ध नहीं रखूंगा। यदि आप अपने इस व्रत पर दृढ़ रहेंगे तो निश्चय ही आपकी धर्म-पत्नी अल्पकाल में ही आश्चर्यजनक उन्नति करके दिखा देगी। परन्तु यदि आप इस समय चूक गये और बच्चे पैदा करना शुरू कर दिया, तो फिर आप आजन्म भी स्त्री को सुशिक्षित नहीं बना सकते। बच्चे की माता हो जाने पर स्त्री से लिखने-पढ़ने की आशा करना दुराशा मात्र है।

कामी पुरुष गृहस्थ-सुख नहीं भोग सकता। अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला पुरुष ही स्त्री को अपने अनुकूल बना सकता है। जो अपनी काम-वासना को वश में रख सकता है, स्त्री उसी के वश में रहती है। लम्पट पुरुष सदा स्त्री का दास हुआ करते हैं।

पत्नी के साथ ऐसा प्रेम-पूर्वक व्यवहार करो कि वह तुम्हारी जुदाई से आकुल हो जाए और सदा तुम्हारे घर आने की बाट जोहती रहे। यदि तुम उसको अपना समय दोगे तो वह कभी भी पर-पुरुष की संगति की कामना न करेगी।

यदि तुम देखो कि तुम्हारी स्त्री बुरा मानती है तो दूसरी स्त्रियों के रूप-लावण्य की प्रशंसा मत करो। फोड़े को खुजलाना बुद्धिमत्ता नहीं, यद्यपि कई लोगों को इसमें विचित्र आनन्द मिलता है।

अपनी पत्नी को निरन्तर मत कहते रहो कि राम की पत्नी कैसी सुन्दरी है, या ज्ञान कितना भाग्यवान् है जिसे ऐसा उत्तम भोजन बनाने वाली पत्नी मिली है। इन दूसरी पत्नियों के उत्तम गुणों को उसके गले में ठूंसने से उसे आनन्द प्राप्त होगा, तुम ऐसी आशा नहीं कर सकते।

पत्नी के सामने बार-बार अपनी माता का गुणानुवाद न करते रहो, नहीं तो हो सकता है कि तंग आकर वह तुम्हें कह दे कि मेरे साथ विवाह करके आपने बड़ी भूल की, अच्छा था कि माता की गोद में ही बैठे रहते। स्मरण रहे कि तुम्हारी उत्पत्ति के पहले ही तुम्हारी माता एक अनुभवी गृहिणी बन चुकी थी, और तुम्हारी स्त्री ने अभी गृहस्थाश्रम में प्रवेश ही किया है।

पत्नी की सखियों से डाह मत करो। यदि वह उनके साथ कभी-कभी वार्तालाप या उत्सव में कुछ समय व्यतीत करे तो अप्रसन्न मत हो। ऐसा न हो कि वह तुम्हें स्वार्थी और दुरात्मा समझने लगे।

दूसरी स्त्रियों के साथ चोंचले मत करो। हो सकता है कि तुम्हारी पत्नी डाह न करे परन्तु यदि तुम चोंचले करोगे तो निश्चय ही वह तुमसे घृणा करने लगेगी।

यदि तुम्हारी पत्नी गरीबों को दान देती और उनकी सेवा करती है तो इस पर आपत्ति मत करो। सुभार्या के दीन-दुखियों की सहायता में समय देने पर रुष्ट होना भारी नीचता है।

रुपये-पैसे, मित्रता, पत्र-व्यवहार इत्यादि सभी बातों में पत्नी पर पूरा-पूरा विश्वास करो, और तुम देखोगे कि वह बहुत कम अपने को तुम्हारे विश्वास की कुपात्रा प्रमाणित करेगी।

स्त्री और सब कुछ सहन कर लेती है परन्तु वह मायके का अपमान सहन नहीं कर सकती। इसलिये उसके माता-पिता या भाई के प्रति कभी तिरस्कार और निरादर का शब्द मत कहो। इसके लिए वह तुम्हें कभी क्षमा नहीं कर सकती।

४

आमदनी

रुपयों की किसी उपयुक्त रकम के लिये अपने जीवन का बीमा अवश्य करा रक्खो। तब तुम्हें कम-से-कम इतना तो मालूम रहेगा कि यदि मेरी अचानक मृत्यु हो गई तो मेरी स्त्री को भूखों नहीं मरना पड़ेगा।

घर का सारा लेन-देन अपने ही हाथ में न रक्खो। उसे भी इन बातों को सीखने का अवसर दो।

यदि तुम्हारे पास पैसे हों तो घर की चीज़ें लाने में कंजूसी मत करो। 'थूक से कभी बड़े नहीं पक सकते।'

जो कुछ कमाओ पत्नी के हाथ में दे दो, और कह दो कि 'अब तुम जानो, तुम्हारा काम। सारे खर्च इसमें से पूरे करने होंगे। कंजूसी से या उदारता से जैसे तुम्हारी इच्छा हो, इसी में निर्वाह करना होगा और इसी में से बुढ़ापे के लिये और अन्य नैमित्तिक आवश्यकताओं के

लिये बचाना भी होगा।' आप देखेंगे कि बुद्धिमती स्त्री थोड़ी आमदनी में भी ऐसी उत्तम रीति से निर्वाह करके दिखला देगी कि पुरुष की बुद्धि चकित रह जायगी। यह अनुभवसिद्ध बात है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

यदि पत्नी को तुम्हारी आय का कुछ भी ज्ञान न होगा, और उसके माँगने पर तुम उसे आवश्यकता के अनुसार थोड़े-थोड़े रुपये दोगे या चीजें खरीदकर ला दोगे, तो अपेक्षाकृत खर्च बहुत अधिक बढ़ जायगा और साथ ही पत्नी भी प्रसन्न न रहेगी।

जिन पुरुषों की अमित आय हो उन्हें घर के खर्च के लिए एक उपयुक्त रकम नियत करके नियमपूर्वक पत्नी को दे देनी चाहिये। उस रकम को व्यय करने की पूर्ण स्वतन्त्रता पत्नी को होनी चाहिये। जो पुरुष स्त्रियों से अधेले-अधेले का हिसाब माँगते और अमुक वस्तु इतनी जल्दी क्यों चुक गई; यह पूछते हैं, उनकी स्त्रियां प्राय: अप्रसन्न होकर दुगना-तिगना खर्च बढ़ा देती हैं। फिर उस खर्च को वश में रखना पति के लिये कठिन हो जाता है।

मत समझो कि तुम्हारी स्त्री रुपये के सिवा और किसी चीज़ की भी परवाह नहीं करती। रुपया सुख का मूल नहीं, परन्तु इसके अभाव से बहुत-सा कष्ट हो सकता

है ; पत्नी के साथ मिलकर अपने घर का 'बजट' तैयार करो ।

पत्नी के अपने वैयक्तिक व्यय के लिये भी उसे पर्याप्त धन दे रक्खो । उसे पैसा-पैसा, दो-दो पैसे तुमसे मांगने की आवश्यकता न हो । यह उसका भारी निरादर है ।

चादर देखकर ही पैर पसारो । स्त्री के कहने से या बृथा दिखलावे के लिये अपनी आमदनी से खर्च को न बढ़ाओ ।

ऐसा मत करो कि तुम तो अपनी सब-की-सब आमदनी खर्च कर दो और तुम्हारी पत्नी समझे कि तुम्हारे पास प्रचुर धन है । यदि उसे तुम्हारी आमदनी का पता न होगा, तो वह कभी भी किफायत नहीं कर सकती ।

अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष केवल धन इकट्ठा करने की चिन्ता ही में न व्यतीत कर दो । स्त्री और बच्चों के साथ जीवन का आनन्द भी लो । इसमें सन्देह नहीं कि धन एक आवश्यक चीज है, परन्तु वह चिन्तन के योग्य एकमात्र चीज नहीं ।

किफायत करने का सारा बोझ पत्नी ही पर न छोड़ दो । तुम्हें भी सिगरेट, तम्बाकू, पान-सुपारी, और सिनेमा-थियेटर के खर्च घटाने चाहिए ।

तुम्हारी पत्नी के पास जो उसका निजी धन है,

उसको अपने द्वारा किसी व्यापार में लगा देने की उसे प्रेरणा मत करो। तुम्हारा संकल्प शुद्ध है, परन्तु यदि उस व्यापार में खसारा हो गया, या वह बैंक डूब गया तो उस धन की हानि के लिए वह तुम्हें उत्तरदाता ठहराये बिना न रह सकेगी। उसके निजी रुपये को अलग ही रहने दो।

'विवाह करके मैं तो विपत्ति में फँस गया, इससे तो मेरा जीवन नष्ट हो गया, यदि मेरी स्त्री और बच्चे न होते तो मैं बहुत उन्नति करता', ऐसा भाव कभी भी मन में न लाओ। इसके विपरीत सोचो कि यदि तुम विवाह न करते तो तुम्हें कितने बड़े अलौकिक गृहस्थ-सुख से वंचित रहना पड़ता।

५

गृहस्थी की बातें

घर से बाहर तुम्हारा राज्य है। बाहर की बातों में तुम जैसा चाहो वैसा कर सकते हो। परन्तु घर के भीतर तुम्हारी पत्नी का राज्य है। वह इस घर की महारानी है। उसके गृह-प्रबन्ध में हस्तक्षेप मत करो। घर में दो का शासन होने से काम बिगड़ जाता है।

पत्नी के बनाये भोजन पर, उसके संगीत पर वास्तव में जो कुछ भी वह करती है, उस पर नाक मत चढ़ाओ। यदि तुम नाक चढ़ाओगे तो ऐसा वैमनस्य खड़ा हो जायगा जिसे तुम आसानी से शान्त न कर सकोगे।

नौकरों पर व्यर्थ प्रभुता न दिखाओ। जो काम वे बरबस करेंगे वह कभी अच्छा न होगा। दया और नर्मी के बर्ताव से जो काम निकल आता है, वह कठोरता से कदापि नहीं निकल सकता।

ऐसा विचार मन में मत लाओ कि घर में स्त्रियों को कुछ काम ही नहीं होता, वे बेकार बैठी रहती हैं। स्मरण रहे कि तुम तो कुछ घण्टे ही दफ्तर में काम करके चले आते हो, और अगले दिन तक आराम करते रहते हो, परन्तु स्त्री का काम रात को सोने के समय तक भी समाप्त नहीं होता। वह खाट पर लेटी हुई भी सोचती है कि आज कौन-कौन से काम नहीं हो सके।

घर का एक खण्ड पत्नी के लिए विशेष रूप से अलग रक्खो। उसमें वही रहे और तुम वहाँ न बैठो। यदि घर में एक ही कमरा हो तो बीच में परद लटका कर उसके दो भाग कर लो। पत्नी के लिए ऐसे स्थान की आवश्यकता है, जहां वह एकान्त में बैठ सके।

स्त्री और पुरुष के कमरे जुदा होने से वे एक दूसरे से अलग बैठकर बहुत काम कर सकेंगे। समीप बैठने से बातों में समय नष्ट होगा और एक दूसरे के संग से जी ऊब जायगा।

यदि तुम्हारी स्त्री की चिन्तायें और झंझट तुम्हें तुच्छ प्रतीत हों तो इसका यह अर्थ नहीं कि तुम उसके साथ सहानुभूति न प्रकट करो। तुम पर कभी रोगी बच्चों और बुला-बुलाकर थका देने वाले दास-दासियों के निरीक्षण का बोझ नहीं पड़ा, इसलिए तुम अनुभव नहीं करते कि गृहिणी को कितना आयास करना पड़ता है,

और किस प्रकार बहुत से राई के दाने इकट्ठे होकर पर्वत बन जाते हैं। तुम इन सब कष्टों को थोड़ी-सी कृपापूर्ण सहानुभूति दिखलाकर बड़ी आसानी से दूर कर सकते हो या यों कहकर कि तुम योंही राई का पर्वत बना लेती हो, पत्नी के कष्ट को और भी बढ़ा सकते हो।

मत समझो कि तुम्हारी व्यापार-सम्बन्धी चिन्ताएं बहुत अधिक महत्व रखती हैं। उसकी अपने काम की चिन्तायें उसके लिये वैसी ही वास्तविक हैं, जैसी कि तुम्हारे लिए तुम्हारी।

नौकर न होने पर, या नौकर के भाग जाने पर यदि तुम घर के काम में पत्नी का हाथ बटा दोगे तो इसमें तुम्हारा कोई अपमान नहीं। चूल्हे में आग जला देने, दीपक बालने या भाजी छील देने में तुम्हारी कोई हानि नहीं। याद रक्खो तुम्हारी स्त्री को अनेक ऐसे कार्य करने पड़ते हैं, जिनके करने का उसको पहले कभी अभ्यास नहीं था।

पत्नी को घर का काम-काज करने वाली दासी ही मत बना दो। यदि वह आप अपने संसार को विस्तृत नहीं करना चाहती तो यह काम उसके लिये तुम्हें कर देना चाहिए। परन्तु अधिक सम्भव यही है कि वह अपने को पुरानी दुनियां से बाहर निकालने के लिए थोड़ा-सा प्रोत्साहन चाहती है।

घर में अपनी प्रकृति का कृष्ण-पक्ष मत दिखलाओ। तुम्हें इस बात का ध्यान रहे कि अपरिचित लोग चाहे तुम्हें अच्छा समझें या बुरा, परन्तु तुम्हारी स्त्री और बच्चों की सम्मति तुम्हारे विषय में बहुत अच्छी हो। तुम बाहर वालों के साथ तो केवल कुछ घंटे ही रहते हो, परन्तु तुम्हारा जीवन परिवार के साथ ही व्यतीत होता है, और उनका तुमको सुखी या दुःखी बनाना तुम्हारे अपने बर्ताव पर निर्भर है। अपने सर्वोत्तम गुणों से उनको लाभ पहुँचाओ।

अपने परिवार में बड़े उपदेशक न बने फिरो। युवती पत्नी का, स्कूल के बच्चों के सदृश नियम बनाकर शिक्षण करना मूर्खता है।

याद रक्खो प्रतिभा की अपेक्षा चरित्र अधिक महत्व की चीज़ है। यदि तुम्हारी स्त्री एक सच्ची स्त्री है, तो फिर बाकी के विषय में चिन्ता मत करो।

हँसी-मखौल का स्वभाव बनाओ। इससे घर में तुम कई कठिनाइयों से बचे रहोगे।

उसी परिवार के साथ मित्रता का सम्बन्ध करो, जिसे तुम्हारी पत्नी भी पसन्द करती है। यदि तुम किसी ऐसे परिवार के साथ मैत्री करोगे जिसे तुम्हारी पत्नी पसन्द नहीं करती, तो घर में सदा वैमनस्य रहेगा

पत्नी को आज से दस वर्ष पहले के फैशन के कपड़े पहनाने का यत्न मत करो। पुरुष प्रायः नया फैशन जल्दी ग्रहण नहीं करते, परन्तु स्त्री नवीनतम फैशन के गहने और कपड़े पसन्द करती है।

६

मनोरंजन

सायंकाल और सम्भव हो तो सवेरे भी पत्नी को अपने साथ बाहर घूमने ले जाओ। इसमें झूठी लोक-लाज से मत डरो। इससे उसका स्वास्थ्य सुधरेगा और मन प्रसन्न होगा।

आप तो सिनेमा और नाटक देखते फिरो और पत्नी घर में बैठी तुम्हारी प्रतीक्षा में जागती रहे, यह तुम्हारी स्वार्थपरता है। इस मनोरंजन में घर वाली को भी अपना हिस्सेदार बनाओ।

अपने आप ही यह मत समझ लो कि अब मेरी स्त्री मेरे साथ बाहर जाने में असमर्थ है क्योंकि उसे बाल-बच्चों और घर-बार की देखरेख करनी होती है। उसे साथ चलने के लिए कहो, यत्नपूर्वक नहीं, वरन् जैसे कि तुम उसे सचमुच साथ ले चलना चाहते हो। तुम देखोगे कि वह प्रायः

चलने का प्रबन्ध कर लेगी।

कितने ही पुरुष लम्बी छुट्टियों में आप तो पर्वतों की सैर करने निकल जाते हैं, परन्तु अपनी पत्नियों को देहली की गरमी में जलने के लिए छोड़ जाते हैं। यह कर्म गृहस्थ-धर्म के विरुद्ध है। दुःख-सुख दोनों में स्त्री-पुरुष साथ रहने चाहिएं। यदि आप स्त्री को साथ लेकर लम्बी यात्रा नहीं कर सकते तो छोटी यात्रा से ही संतुष्ट रहिये, परन्तु उसको साथ अवश्य रखिये ताकि मनोरंजन के साथ-साथ उसकी जानकारी भी विस्तृत हो। यदि आप तो बहुत बड़े अनुभवी हो जायँगे परन्तु आप की स्त्री कूपमण्डूक ही बनी रहेगी तो आप जीवन का आनन्द कभी न ले सकेंगे। जब तक पति-पत्नी अपने सुखों का थोड़ा बहुत त्याग न करेंगे, वे गृहस्थ-धर्म को सुख और शान्ति से नहीं निभा सकते।

हरिद्वार आदि तीर्थों और धार्मिक तथा राष्ट्रीय मेलों में स्त्री-बच्चों सहित जाने का यत्न करो। इससे ज्ञानलाभ के साथ-साथ मनोविनोद भी होता है।

जब किसी यात्रा या उत्सव में जाने लगो तो जाने से केवल पांच ही मिनट पहले आकर पत्नी को चलने के लिए न कहो। उसे तैयारी में देर लगाना आवश्यक है, क्योंकि उसे घर का और बच्चों का प्रबन्ध करना होता है। वह आपकी तरह एक बैग उठाकर नहीं चल सकती।

घर की चिन्ताओं में फँसी हुई स्त्रियां प्रायः बड़ी ही गम्भीर हो जाया करती हैं। उन्हें दिन-रात घर के काम से ही फुरसत नहीं मिलती। मनोरंजन और विनोद होने से वे प्रायः कुढ़ती और खिझती रहती हैं और जवानी में ही बूढ़ी हो जाती हैं। इसलिए उनमें मनोरंजन और हँसी-मखौल की आदत डालने के लिए पति को पत्नी के साथ शतरंज और ताश आदि खेलने चाहियें। यदि उसे न आते हों तो सिखला देने चाहिएं। जीवन में सदा हँसते-खेलते, नाचते-कूदते और गाते-बजाते चलना चाहिए। प्राचीन आर्य लोग सदा प्रसन्न रहा करते थे। कृष्णचन्द्र का जीवन यही बता रहा है। सदा रोते-झींकते रहना ठीक नहीं; इससे आयु घटती है।

जो नई और महत्त्व की बात तुम दैनिक समाचार-पत्रों में पढ़ो या सुनो, वह घर आकर अपनी स्त्री और बच्चों को भी सुनाओ। इससे जहां उनकी जानकारी बढ़ेगी वहां वे बाह्य जगत् में भी दिलचस्पी लेने लगेंगे।

पत्नी को उत्तमोत्तम उपन्यास, जीवन-चरित्र तथा दूसरी उपयोगी पुस्तकें लाकर दो ताकि वह मानसिक आनन्द का भी उपभोग कर सके।

छुट्टी के दिन स्त्री और बच्चों को चिड़ियाघर, अजायबघर या नदी की सैर के लिए जरूर ले जाओ। तुम

आप चाहे ये चीजें रोज देखते हो परन्तु उनको घर से बाहर की हवा में सांस लेकर प्रसन्नता होगी।

छुट्टी मिलते ही यात्रा के लिए न दौड़ जाओ, और फिर वहां से बीमार होकर पत्नी से सेवा कराने के लिए घर आकर न लेट पड़ो। अपनी शक्ति के अनुसार सफर करो। बहुत दौड़-धूप करके थकावट से चकनाचूर हो जाने की क्या आवश्यकता है?

७

स्वास्थ्य

पत्नी को सिर-दर्द, जुकाम, या ऐसा ही कोई और हल्का रोग हो जाने पर अधीर मत हो जाओ। क्योंकि तुम्हारा अपना स्वास्थ्य उत्तम है इसलिए तुम्हें पत्नी के प्रति उदासीन होने का प्रयोजन नहीं। परन्तु इसके विपरीत—

जब स्त्री की छोटी उँगली दुखती हो तो उसे इतना लाड़ न करो कि वह रोग से अपने को मरणासन्न ही समझने लगे, यद्यपि वास्तव में वह राजी-खुशी हो। उसे सिड़ी मत बनने दो। तुम्हें निर्दय होने का प्रयोजन नहीं परन्तु तुम उस पर करुणा प्रकट करने से इनकार कर सकते हो।

पत्नी के मरणासन्न हो जाने पर ही डाक्टर को न बुलाओ। कई स्त्रियां नीरोग होते हुए भी अपने को यों

ही रोगी मान लेती हैं, परन्तु कई ऐसी भी हैं जो प्राण कण्ठ में आ जाने पर भी अपना रोगी होना नहीं बतातीं। उनके पतियों को उनका ध्यान रखना चाहिए।

तबीयत साफ न हो तो ठण्डे जल से स्नान न करो। क्योंकि इससे ज्वर और जुकाम हो जाने का डर है।

सर्दियों में भी कमरे की सभी खिड़कियाँ बन्द कर के न सोओ। इससे सिर-पीड़ा और पसली का दर्द होने की आशंका है।

यदि तुम्हारी दृष्टि दुर्बल हो तो ऐनक लगाने में लज्जा न करो।

सदा स्वास्थ्य ही की चिन्ता में न डूबे रहो। यदि वस्तुत: तुम अपने को रुग्ण अनुभव करते हो, या तुम्हें किसी खराबी का सन्देह है, तो स्त्री को सुनाकर 'न मालूम मुझे क्या हो गया है' बार-बार कहने और उसे चिन्तातुर करने की अपेक्षा किसी वैद्य से जाकर परामर्श करो।

रात्रि को बहुत देर तक मत जागो, और सवेरे सूर्योदय से पहले उठ बैठो।

शरीर से अपनी शक्ति से बढ़कर काम मत लो। श्रम के पश्चात् पूर्ण विश्राम लो।

कई पुरुषों को तोता पालने, घर में फल आदि बोने, बाजा बजाने, गाने या कुत्ते रखने का शौक होता है। ये शौक बुरे नहीं। इनसे मनोरंजन के साथ-साथ स्वास्थ्य को भी बहुत लाभ पहुंचता है। परन्तु तुम्हारे शौक का बोझ पत्नी पर नहीं पड़ना चाहिए। यह न हो कि फूलों को पानी देने, पक्षियों को चोगा खिलाने, कुत्तों को नह-लाने-धुलाने का सारा काम तो उसको करना पड़े, और तुम केवल फूलों को तोड़कर कोट में टाँगे फिरो। यदि तुम्हें कोई शौक है तो उसका सारा बोझ अपने ऊपर लो। गाने और बजाने में भी इस बात का ध्यान रक्खो कि तुम्हारे कारण दूसरों को घर में चैन से बैठना दूभर न हो जाए।

जहाँ तक हो सके अपने शौक ऐसे रक्खो जिनमें तुम्हारी पत्नी भी प्रसन्नतापूर्वक भाग ले सके। तुम्हारे इकट्ठे मिलकर काम करने से परस्पर प्रेम बढ़ेगा।

मत समझो कि क्योंकि तुमने विवाह कर लिया है, इसलिए अब कबड्डी, गतका, बाना, क्रिकिट, फुटबाल या टेनिस खेलना ठीक नहीं। व्यायाम से तुम हृष्टपुष्ट बने रहोगे।

यदि तुम्हारी पत्नी किसी धार्मिक या राष्ट्रीय सभा में जाना चाहे तो उसे इस बात से मत रोको। इससे, अन्त में तुम्हें ही लाभ होगा।

भोजन के समय रोज बड़बड़ाते ही न रहा करो। इससे तुम्हारी पत्नी यह समझने लगेगी कि वह तुम्हें कभी भी प्रसन्न नहीं कर सकती। वह कुछ देर बाद तंग आकर तुम्हें उत्तम भोजन द्वारा प्रसन्न करने का यत्न ही छोड़ देगी, जिससे तुम्हारी अवस्था पहले से भी खराब हो जाएगी।

सदा नियत समय पर भोजन किया करो। कभी नौ बजे और कभी दो बजे खाने न बैठा जाओ। इससे स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

कुछ नासमझ पति पत्नी के आराम का कुछ भी खयाल नहीं करते। भोजन का समय सांझ के सात बजे है तो वे रात के ग्यारह-ग्यारह बजे तक घर नहीं लौटते। पत्नी बेचारी प्रतीक्षा में बैठी रहती है। फिर जब वे ग्यारह बजे आ भी निकलते हैं तो गरम-गरम खाना मांगते हैं। यह पत्नियों पर बड़ा भारी अत्याचार है। यदि किसी दिन कार्यवश आपको देर से घर लौटना हो तो पत्नी को पहले से सूचना दे रखनी चाहिए। सदा यही यत्न करना चाहिए कि भोजन के नियत समय पर आप घर पहुँच जाएँ। हिन्दू पत्नियां प्रायः पति के बाद खाती हैं। आपके कारण आपकी पत्नी को आपसे भी अधिक देर तक भूखी रहना पड़ेगा। घर कोई होटल या क्लब नहीं।

जो पदार्थ तुम्हारी प्रकृति के अनुकूल नहीं और तुम्हें ठीक तौर पर पच नहीं सकते, उनको केवल स्वाद की खातिर खाने का हठ मत करो। इनसे तुम रोगी हो जाओगे और भोजन अच्छा न बनने का बहाना करके पत्नी को कोसोगे।

हिन्दू स्त्रियां प्रायः सारा पौष्टिक पदार्थ पति को खिलाकर आप सूखी और बची-खुची रोटी खाकर ही निर्वाह कर लेती हैं। उनके इस त्याग की प्रेरक उनकी पतिभक्ति है। परन्तु यह बात अच्छी नहीं। उत्तम भोजन न खाने से हिन्दू स्त्रियां प्रायः शीघ्र ही दुर्बल और वृद्ध हो जाती हैं। आपको चाहिए कि पत्नी के खान-पान का ध्यान रक्खें। उसे दूध-घी आदि पौष्टिक पदार्थ खिलाने का प्रबन्ध करो। उसके अल्पकाल में बूढ़ी होकर मर जाने से तुम पर वह विपत्ति आ सकती है कि जिससे दूध-घी की सारी कंजूसी निकल जाएगी।

स्त्रियां प्रायः अपने बिछौने मैले रखा करती हैं। तुम्हारी पत्नी के पास इतने वस्त्र अवश्य होने चाहिएं कि वह अपना बिछौना साफ-सुथरा रख सके। बुद्धिमती पत्नियां बच्चों को आरम्भ ही से ऐसा स्वभाव डालती हैं कि वे कभी बिछौने पर हगते-मूतते नहीं। हाजत होतेै ही वे विशेष प्रकार की चेष्टा करने लगते हैं, जिससे माता

झट समझ जाती है, और बच्चे को बिछौने पर से उठा लेती है।

भोजन करते समय कोई अप्रिय बात न छेड़ो। पहले भोजन कर लो। जब तक खाते रहो चिन्ता और झंझट मन से दूर रखो।

८

सन्तान

बच्चों से कभी ऐसी बात मत कहो जिससे उनकी दृष्टि में उनकी माता का मान कम होता हो।

पत्नी को सारे दिन बच्चों ही में मग्न न रहने दो; उसके समय पर तुम्हारा भी अधिकार है। बच्चों की माता हो जाने से वह तुम्हारी प्राणवल्लभा नहीं रही, ऐसा विचार और बर्ताव उसे कदापि मत करने दो।

जब तुम्हारे बच्चे अपने अध्ययन में तुमसे सहायता माँगें तो इसे उत्पात न समझो। यदि तुम सहायता दे सकते हो तो प्रसन्नतापूर्वक दो, यदि नहीं दे सकते तो साफ कह दो।

बच्चे तुम्हें सतायें नहीं, इस विचार से सदा यह न कह दिया करो—'जाओ, अपनी माता से जाकर पूछो।'

जब तुम्हारी पत्नी संतान के विषय में तुमसे कोई

परामर्श मांगे, तो यह मत कह दो—'यह मेरा काम नहीं', या 'मुझे क्या मालूम ? यह तुम्हारा काम है और तुम्हें मालूम होना चाहिये।'

स्मरण रहे कि बच्चे पैदा करना मुश्किल नहीं। वे तो बिना बुलाये मेहमानों के सदृश अपने आप चले आते हैं। मुश्किल है उनका भली प्रकार से पालन-पोषण और शिक्षण करना, उनके शरीर तथा मन का पूर्ण रूप से विकास करके उनको जीवन-संग्राम में विजयी बनाने के योग्य करना और उनमें उत्तम स्वभाव और सदाचार का बीज बोकर उन्हें देश, धर्म और जाति की सेवा के लिये तैयार करना। बच्चों को नीरोग, सदाचारी और सुशिक्षित बनाने में जितना भी परिश्रम किया जाए और जितना भी धन व्यय किया जाय थोड़ा है। बच्चा ही राष्ट्र की सम्पत्ति है। जो माता-पिता सन्तान को सुशिक्षित नहीं करते वे महापाप करते हैं। मेरी रची हुई 'बालक' नामक पुस्तक से माता-पिता को बच्चों की शिक्षा में बड़ी सहायता मिल सकती है।

जब तक आजीविका का कोई स्थिर प्रबन्ध न हो जाय, कभी विवाह मत करो। केवल उतनी ही सन्तान उत्पन्न करो जितनी का पालन-पोषण और शिक्षण तुम भली भांति कर सकते हो।

जिनके खिलाने-पिलाने और पढ़ाने की सामर्थ्य तुम

में नहीं, उनको पैदा करके संसार में दुःख की मात्रा बढ़ाना पाप नहीं तो और क्या है ?

'मैं बहुत थका हुआ हूँ, मैं बच्चों के साथ खेल नहीं सकता,' सदा ऐसा मत कह दिया करो। वे अनुभव करना चाहते हैं कि उनके जहाँ माता है, वहां कोई पिता भी है।

बच्चों की माता का स्वयं सम्मान करके उनके सामने उदाहरण प्रतिष्ठित करो। जब वे तुम्हें उसका सम्मान करते देखेंगे तो वे भी उसके आज्ञानुवर्ती बने रहेंगे।

सन्तान के पालन-पोषण और शिक्षण का सारा भार अपनी पत्नी ही पर न छोड़ दो। उसके साथ सभी मुश्किलों पर विचार करके इस बात का निर्णय करो कि वर्तमान अवस्थाओं में काम करने की सर्वोत्तम रीति कौन-सी है।

देखो, तुम्हारे बच्चे तुमसे भयभीत न रहें। उनके चरित्र की कुंजी प्रेम है, भय नहीं।

हौआ मत बनो। अनेक घरों में पिता के आने की आहट पाते ही डर के मारे हँसना-खेलना सब अपने आप बन्द हो जाता है। वहां इतनी शीघ्रता से निस्तब्धता छा जाती है मानो किसी ने एकदम चाबी मरोड़ दी हो। यह बात बहुत बुरी है। यह अनुचित 'दबदबा' हानिकारक है। तुम्हारे बच्चों को यह अनुभव होना चाहिए कि हमारा पिता हमें देखकर प्रसन्न होता है।

इसका यह अर्थ नहीं है कि बच्चे दुष्ट और उद्दण्ड

हो जाएं। हमारा पूर्ण विश्वास है कि यदि माता-पिता हमारी उपर्युक्त 'बालक' नामक पुस्तक की सहायता से सन्तान में उत्तम स्वभाव डालने का धैर्यपूर्वक प्रयत्न करेंगे तो उन्हें बच्चों को पीटने की कभी आवश्यकता न होगी और बच्चे माता-पिता से, सच्चे हृदय से, प्रेम करते हुए सदा उनके अज्ञानुवर्ती बने रहेंगे। खेद है कि अनेक माता-पिता बाल-मनोविज्ञान और शिशु-शिक्षा की यथार्थ पद्धति का ज्ञान न होने से केवल दंड से ही सन्तान को सुधारने का यत्न करते हैं, और इसमें उनको कभी सफलता नहीं होती। सन्तान को सुधारने के पहले माता-पिता के अपने सुधार की आवश्यकता है।

६

गार्हस्थ्य-सूत्र

पत्नी के सामने दूसरे के बच्चे की प्रशंसा कभी मत करो।

स्त्री प्रेम की भिखारिन है, धन की नहीं।

स्त्री को तर्क से मनाना कठिन है। उस पर भावना का ही असर होता है।

स्त्री वस्तु की मज़बूती और पायदारी की कुछ परवाह नहीं करती। उसके सौन्दर्य पर रीझती है।

शिक्षितों को भी जिस बात के समझने में देर लगती है, उसे स्त्री अपनी सहज बुद्धि से तत्काल समझ लेती है।

स्त्री को प्रसन्न करना हो तो उसके बच्चे से प्रेम करो।

जो स्त्री घर का सारा काम-काज आप कर सकती

है, वही नौकरों से भी भली भांति काम ले सकती है।

खाट पर बैठे-बैठे हुक्म चलाने वाली और स्वयं कुछ न कर सकने वाली स्वामिनी सदा नौकरों पर खीझती रहती है। नौकर काम भी ठीक नहीं करते और उससे असन्तुष्ट भी रहते हैं।

बाज़ार से जो वस्तु घर के लिए, पत्नी को दिखाये बिना खरीदो वह दुकानदार से इस शर्त पर लो कि यदि वह घरवाली को पसन्द न आएगी तो उसे वह वापिस लेनी पड़ेगी। अन्यथा तुम्हारे घर में शांति न रह सकेगी।

जिस स्त्री या पुरुष को तुम्हारी पत्नी अच्छा नहीं समझती उससे तुम भी प्रेम मत करो।

जिस बात को स्त्री किसी प्रकार नहीं मना सकती, उसे वह रोकर मनवा लेती है।

आलिंगन स्त्री के रोष की रामबाण-औषध है।

जो पुरुष परमात्म-भक्ति, योग-साधन, वैराग्य-वृत्ति इत्यादि की डींग मारते या दिखलावा करते हैं और घर में बहुत कम बैठते हैं, वे प्रायः ऐसे लोग होते हैं जिनकी पत्नी के साथ सदा अनबन रहती है। पत्नी के साथ कलह रहने से ही पुरुषों को बहुधा वैराग्य और भक्ति सूझा करती है। जो पत्नी-भक्त नहीं, वह ईश-भक्त भी नहीं हो सकता।